॥ शिरोमणि शबरी मैया की जय ॥

माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण

(सचित्र भाषा टीका सहित)

सो०- तुलसीकृत मानस, सुपात्र शबरी महान ।
'हंस' कथा भानस, ब्रह्मचारी बलिदान ॥1॥

महावीर मन्दिर जक्शन पटना । राम लखान शबरी सम्हना ॥
विग्रह सम्मुख बैठी रचाई । शुबह शाम हनुमान जगाई ॥
सुरति डोर हनुमान बढ़ाता । शबरी कथा पूर्ण लिखवाता ॥
संत जी आर. हंस शीश झुकाता । संत चरणन नित दण्ड बजाता ॥

16 अगस्त 2008
महावीर मंदिर पटना जक्शन
बिहार

साहित्यकार
संत जी.आर. हंस उर्फ हंसात्मा दास
मो० : 9771597390

कथावाचक वनवासी

गट्ठर लकड़ी का लिए, मुसहर दम्पति जाय ।
लगी प्यास श्यामा को, रामु से कहि बुझाय ॥

वनवासी समाज उराव कोल किरात भील अन्तर्गत एक मुसहर दम्पति रामू और श्यामा जंगल से जलावन के लिए लकड़ी का गट्ठर सिर पर लिए गाँव आ रहे थे । सिर पर गट्ठर का बोझ ऊपर से गर्मी का रोष, अन्दर से प्यास का तिखिा से व्याकूल श्यामा अपने पति रामू मुसहर से यूं बुझौवल कही-

ऊपर से गिरा चोचा । तोरे बाप का डाढ़ी नोचा ।
नही सोचा था कोचा । था मृग तृष्णा सा मोचा ॥

अत: गट्ठर पटक बैठ गयी । बगल में ही श्रीमद्भगवत कथा हो रहा था वहाँ पर पानी होने का अनुमान कर रामू मुसहर भी वही लकड़ी का गट्ठर रख पत्नी के साथ चल दिया । कथावाचक स्थल पर पहुँच पानी पी प्यास बुझाया थोड़ी देर के लिए आराम की मुद्रा में वहाँ बैठ श्री राम कथा सुनने लगे ।

कुछ देर के बाद रामू मुसहर अपनी पत्नी श्यामा से चलने को कहा बड़े ध्यान से एकाग्रचित हो श्री राम कथा सुन रही श्यामा मुसहरनी को पति के बातों का ध्यान न रहा । उल्टे पति से अनुरोध करने लगी की श्रीराम कथा मुझे बहुत अच्छी लग रही है । इसे सुनकर ही चला जाय । भूख से व्याकूल रामू ने बड़े प्यार से कहा कि चलो हम तुम्हें रास्ते में श्रीराम कथा कहते चलेंगे । इतना सुनते ही श्यामा अपने पति के साथ चल पड़ी । श्रीराम कथा सुनाने को कहा तो रामु अपने पत्नी श्यामा की कलाई पकड़ श्रीराम कथा कहते चलने लगा । जरा सोचो समझो और गौर करो-

राम रावन्ना दोऊ जन्ना । रहा एक क्षत्रि एक बभन्ना ॥
ऊ राम के नारि चोरवलसी । उरावन के नाश करवलसी ॥
कुबोली सुनि सीता को त्यागलसी । बालमिकी से लवकुश पवलसी ॥
सुनि गुनि तुलसी लिखा पोथिन्ना । समय अनमोल प्यारी खोऊना ॥

❖

॥ ऊँ शबर्यै नमः ॥

माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण

सर्वाधिकार : लेखक

लेखक : संत जी. आर. हंस

संस्करण : प्रथम 2009 ई०

पूज्य गुरु : श्रीश्री 108 फलाहारी बाबा
सूर्यवंशीदास त्यागी जी महाराज
प्रधान पूजारी, महावीर मन्दिर, पटना जक्शन
(बिहार)

प्रकाशक : महावीर मन्दिर पटना जक्शन (बिहार)

मुद्रक : हंस प्रेस, मोहानियाँ, कैमूर

विरतक : 1. महावीर मन्दिर
2. संत पार्वती देवी (कोषाध्यक्ष अम्वेडकर स्वयं.स.स.एवं
हंस ग्रंथमाला, महरो, पो० पिपरियाँ
भाया- दुर्गावती, जिला- कैमूर - 821105 (बिहार)

MAA SHABARI SAMPURN LILA DARPAN

Edited by : **Sant G.R. Hans**

Rs. 25

शुभ सम्मति

संत जी. आर. हंस उर्फ हंसात्मा दास जी को शुभ कामना प्रेषित करते हुए मझे परम संतोष का अनुभव हो रहा है जिन्होंने गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीमद् रामायण श्रीरामचरित्र मानस की गहराइयो में अवगाहन कर अनेक रत्नो की खोज की है । उक्त महाकाव्य के तृतीय सोपान 'अरण्यकाण्ड' से एक अनूपम रत्न महियषी, गरियषी भगवद् भक्ता माँ शबरी का सम्पूर्ण जीवन दर्शन को लघुकाव्य 'माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण' के रूप में शोध निकाला। मानव जीवन के तीनो प्रमुख साधनो-कर्म, ज्ञान और उपासना का सम्यक् विवेचन है ।

सोरठा, छंद, चौपाई दोहा एवं भजन से सुसज्जित व नवीनतम रूप तथा अन्य भावार्थ का समायोजन भी उचित ढंग से किया गया है । काव्य की सुन्दरता को बढ़ाने के लिए आठ-दस चौपाइयों के बाद दोहों का रोपड़ बहुत सुन्दर, सरस एवं लचिले ढंग से हुआ है । जिसमें सार्थक कुल दोहों की संख्या 145 है ।

अतः आप 'माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण' लघु काव्य दर्शन को सरस सरल, सुबोध शब्दों में रचनाकर सर्वसुलभ बनाने का सराहनीय व अकथनीय प्रयास किया है ।

मैं संत जी. आर. हंस जी को साधुवाद और धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्य के अध्ययन और लेखन में लगाया है। आप परम पिता परमेश्वर श्रीराम के चरणो में ध्यानरत रहे। इन्हीं शुभ कामनाओ के साथ-

-लव कुमार राम
ग्राम- मड़ी, (जयसराम)
चैनपुर, कैमूर (भभुआ)

ॐ अस्य श्रीमद्भभवती माँ शबरी चरीतस्य आदि कवि वाल्मिकी गोस्वामी तुलसीदास घनश्यामदास हंस ऋषयः शिवशक्ति देवता श्रीरामानाम बीजं भवरोग हरी भक्तिः शक्तिममयनिर्वंत्रिताशेष विघ्नतया श्रीराम प्रतिपूर्वक सकल मनोरथ सिद्धयर्थं पाठे विनियोगः।

करु पाठ माँ शबरी का, सुमिरौ पवन कुमार।
'हंस' डर सिवराम बसे, निष्कलंक दरबार।।

धूपदीप से ध्वान लगाके। माँ शबरी चरीत पाठ सुनाके।।
सदा सिंहासन ऊँचा सजावै। प्रतिमा माँ शबरी का बिठावै।।
राम लखन दाहिन चित्र टिकावै। उदर माथे शिव शक्ति बिठलावै।।
बाटो चित्र हनुमान संजाओ। माँ की पावन पूजा चढ़ाओ।।
पूष्पमाल अरु पुष्प चढ़ावै। सुगंधित अगबत्ती धूप जलावै।।
घी घृत चौमूख दीप जलाई। इत्र फूलेल महक रखवाई।।
कोरा घड़ा नीर नरियल टिकावै। बांधी कलाव चंदन लगावै।।
इक चौकी सिंहासन भाई। दूजी रामायण रखवाई।।
तखत पै सिंहासन बंनवाई। उसके उपर देव लगवाई।।

आवाहन सबका करे, मंत्रो से निज आज।
करि आरती कथा सुनावै, सुमिरी सीता राम।।

ॐ श्रीगणेशयनमः। ॐ श्रीशिवाय नमः। ॐ श्री गौरीजगदम्किकायनमः।
ॐ श्रीमाता शबर्वै नमः, ॐ श्रीहनुमतवे नमः। ॐ श्री शबरी शिष्वासुधाप नमः।

गुरुपद मन में सुमिरी के, ध्वान भवानी कंत।
शबरी सुवश वर्णन करूं, जो है अगम अनंत।।

समर्पण

माँ कस्तुरबा शरण गहुं, शबरी कृपा निधान ।
आठ पहर विनवत 'हंस' जय जय जय हनुमान ॥

माँ की असीम कृपा से हमने साहित्य की रचना प्रारम्भ किया जिसमें माँ का आशीर्वाद साथ दिया। साहित्य के प्रति मेरा झुकाव माँ के छोटी-छोटी कहानियो या प्रसंगों को सुनने का मौका मुझे बचपन में मिला, जो आगे चलकर एक विस्तृत काव्य महाकाव्य, खण्ड काव्य कि सरस सलिलता मेरे दिलो-दिमाग पर छाया रहा। परिणामत: माँ के उत्कृष्ट भावनाओं के प्रभाव से सुयोग से ही कवि हृदय को प्राप्त कर 35 ग्रंथों का सृजन कर डाला। मैं अपनी माँ के प्रति आस्थावान तथा समर्पित हूँ ।

श्रीनिधि मातृ कृपा गुण आगर, अद्‌भुत शील स्नेह भरी है ।
पुत्रन के प्रतिपालन नेकहीत, आनंद मंगल देह धरी है ।
यद्यपि 'हंस' सब भांति अज्ञान, तऊ करूणा तुम नित्य करी है ।
संकट में प्रतिपाल मुझे, अपने प्रण से काहू न टरी है ।

सम एवं विषम हर परिस्थितियो में सर्वप्रथम माता ही शिशु का पालन पोषण और गुरु का काम करती है। हर इन्सान माता का कर्जदार होता है। मातृ ऋण से उतृण होने के लिए कोई संजन चाहे सहस्रो जन्म लेकर माता का कर्ज चूकाना चाहे परन्तु कर्ज नहीं चुका सकता है। वह कर्जदार बना रहेगा और बनता जायेगा। मातृ ऋण से उतृण होने के लिए वह मात्र एक ही रास्ता है। अपनी माँ का सेवा वंदना करना और उसकी भावनाओं का रक्षा करना अर्थात माता पृथ्वी से भी भारी है। मैं अपनी माताश्री के युगल चरण रज की वंदना करते हुए उनकी चरणों में मैं 'माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण' को समर्पित करता हूँ। साथ ही प्रात: स्मर्णिय पिताश्री संत प्रवर शोभनाथ राव 'हंस' जी के पावन पुण्य जन्म-तिथि 89 वे वर्ष के संदर्भ में भगवत भजन कीर्तन की उपलब्धि में 'माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण' ग्रंथ रुपी श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूँ।

माता पृथ्वी से भारी उतरीन नहीं नर नारी, सेवा बरदास करी देती गुरु ज्ञान है ।
सभी संकट में उबारी धराधामधन दे सवारी, सबसे निराला माँ की ममता महान है ।
सावित्री सीता अनुसुइया सम चरण पूजुं अपनी मैया, माँ कस्तुरबा पग समर्पित 'हंस' शबरी व्याख्यान है ।
महावीर मंदिर पटना प्रधान पूजारी अपना, बाबा फलाहारी चरण शरण हंस पावत सम्मान है ।

मो०: **9771597390** **-संत जी.आर हंस**

हृदय का उद्‌गार

महामंगल, सर्वेश्वर, सर्वाधार, सर्वोपरि, सर्वात्मा सर्वालंकार भूषित समग्र कल्याण, गुण सम्पन्न श्रीमद् भगवत रसास्वादन परायण, परम आदरणीय, परम सम्मानिय श्रद्धालु श्रोतागण, पूजनीया, वंदनिया मातायें-बहनों। परमात्मा की कथा अनंत है, गुण अनंत है, सारे तत्व अनंत है, क्योंकि ईश्वर अनंत है। वाणी एवं बुद्धि मानव जीवन की जहाँ से वापस आती है, वहाँ से परमात्मा का पवित्र प्रांगण प्रारंभ होता है।

सफलता के सोपान पर विफल एवं तंग रहे हजारो हजार ऋषियों के मांग पर इनके द्वारा कई महीनो पूर्व समायोजित योजना के तहद श्रीराम जी 28000 ऋषियों के साथ श्री श्री शबरी आश्रम पर पधारे है। बाल ब्रह्मचारिणी श्री उदार हृदय संत शिरोमणि माता शबरी जी मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम जी को पहचान परम निष्ठा से माता कौशल्या के समान ही वात्सल्य स्नेह भाव की पराकाष्ठा पर पहुँच अपार प्रेम विह्वल में सु मग्न हो गयी।

वात्सल्य स्नेह में विभोर हो श्रीराम जी शुभ सम्मान के साथ माताश्री शबरी जी का नौ प्रकार से स्तुति किया। अपने बढ़ते ऐश्र्व के दर्प एवं घमंड से रहित और अपनी सेवा से समग्र कल्याणप्रद श्रीमद्‌भगवद् रसास्वादन का अमिट रसधार वहा दी।

गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीराम चरित्रमानस में श्रीमुख से ही दो स्थलो पर पृथक-पृथक रूप से दो प्रकार का नवधा भक्ति का वर्णन हुआ है। उनमें से बड़ी गंभीरता के साथ लक्ष्मण जी के प्रति गृहस्थो के लिए श्रवणादि नौ भक्तियो का और श्रीश्री शबरी जी के प्रति विरक्तों (त्यागियो) के लिए सत संगादी नौ भक्तियो का कथन करके भक्ति के दो सुन्दर सुगम विभाग स्पष्ट कर दिये गये है।

भगति तात अनुपम सुख मूला । मिलई जो संत होहू अनूकूला ॥

श्री रामजी लक्ष्मण जी से कहते है कि हे तात। अनुपम सुखो को प्रदान करनेवाली मूल रूप से भगति ही है। जो संत (गुरु) के अनुकूल परिस्थिति में ही मिल सकती है। अर्थात वही सुयोग्य माता श्री शबरी जी को लग गया था। माताश्री शबरी जी ने संत शिरोमणि महर्षि मतंग मुनि जी महाराज की शरणागति प्राप्त कर ली थी। और वे भी उसे स्वीकार करके उनके अनुकूल हो गये थे। परिणामत: गुरु के आशीर्वाद में ही श्रीश्री 108 श्रीश्री शबरी जी सर्बसिद्धि प्राप्त कर ली थी।

अत: स्पष्ट रूप से विरक्ति की स्पष्ट नमूना, इन नौ प्रकार की भक्तियो की प्रत्यक्ष मूर्ति, वात्सल्यमयी, महियषी माताश्री शबरी थी। उसी का फल यह हुआ की जो पद बड़े-बड़े योगियो को भी दुर्लभ है, वह माताश्री शबरी जी को अनायास ही सहज ही में सुलभ हो गया।

मो० : 9934962340, 9386130300 **-विनय कुमार हंस**
हंस प्रेस, मोहानियाँ, कैमूर

उद्‌बोधन

जय गुरु गणेश शिवशक्ति, सिमिरौं जय श्रीराम ।
संतन को नित डंडवत, कवि को करुं प्रणाम ।।
बुद्धजीवी वरगद छाँव में, सुसंग बड़कपन पाय ।
कथनि करु माँ शबरी का, सबको शीश नवाय ।।

सम्म आदरणीय धर्मप्राण भाइयों, शक्ति स्वरूपा मातायें एवं बहनों। बड़े भाग से ऐसा अवसर जीवों को मिलता है। आज इस जयन्ती/यज्ञ/समारोह/माता स्वरसती के आंगन में मुझे भी अपने मन का उद्‌गार व्यक्त करने का शुभ अवसर मिला है। यह आनंद कन्द प्रभु की भारी कृपा की देन है। आइये मैं अपनी टूटी-फूटि भाषा में माता शबरी जी के सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन करने से पहले मैं क्षमा याचना चाहता हूँ की प्रमादवश मुझसे यदि कही कोई भूल हो जाये तो परम सम्मानिय श्रद्धालू श्रोतागण कृपया मांफ कर दें।

बाल ब्रह्मचारी, बोधिसत्वा, तत्ववेत्ता, त्रिकालदर्शी भगवत भक्ता भगवती, महियषी माताश्री शबरी जी को साडण्वत प्रणाम कर श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। साथही काव्य-ग्रंथ 'माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण' सुधी विद्वान पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। गोस्वामी तुलसीदास कृत रामायण की सुपात्रा माता शबरी के हिय हुलषित व उमड़े वात्सल्य स्नेह में विभोर श्रीराम द्वारा सम्मानित नवधा भक्ति और मोक्ष का वर्णन है।

किसी भी महापुरूष के चरित्र-चित्रण में चारो तथ्यो (वंश, जन्म, जवानी और जीवन का अवसान) का वर्णन होना अति आवश्यक है। इनमें से मात्र किसी एक ही अंश को प्रकाशित करने से किसी भी व्यक्ति का जीवन चरित्र पूर्ण नहीं माना जा सकता है। अतः उपर्युक्त चारो अंशो के सार्थक वर्णन से ही किसी व्यक्ति के जीवन का पूर्ण प्रकाश मिलता है। अर्थात् इसी संदर्भ में काफी सोच-विचार, बहुत दिनों के चिन्तन-मथन के परिणाम स्वरूप 'माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण' नामक लघुकाव्य की रचना कर डाला।

प्रातः स्मर्णिय पिताश्री संतप्रवर स्वामी शोभनाथ राव हंस जी के कथा-प्रवचन से ज्ञात सूत्रो द्वारा ही माता शबरी के सम्पूर्ण जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। जो संकट मोचन महावीर हनुमान जी के हृदय में विराजमान सीता रामजी की अहैतुकी कृपा के ही मूल प्रेरणा रही है।

श्री शिवजी के परम भक्त दम्पति शबरबाहु व सोणमणि के गोद में पलनेवाली सुभद्रा का बचपन सुखमय व हरि ॐ स्मरण, कीर्तन में बीता। क्रुर प्रवृत्ति व हिंसक मिजाजी वर पक्ष द्वारा सामीष भोजन की माँग पर शादी में इकट्‌ठा हो रहे अनेको प्रकार के निरीह पशुओं के बलीभेद को जान उच्चकोटि संस्कार के पूरक

कन्या सुभद्रा हृदय से कांप उठी और अहिसोपदेश दें, जानवरो को मुक्त कर, गृह त्याग, हरि ॐ सिमिरण में वन की ओर दौड़ चली। मार्ग में मिले नारद जी से निष्काम सेवा से संतो का सुयोग प्राप्ति का मंत्र दीक्षा ले महर्षि मतंग आश्रम निकट जा दिन में छीप रात को सेवा में निकलती। अजूबा विधि के विधान और अनमोल सेवा से आचम्भित महर्षि मतंग के शिष्यो द्वारा पकड़ी गयी सुभद्रा के सरल स्वभाव, शरणागता होने और अकाट्य जबाब से महर्षि मतंग मंत्र मुग्ध हो निकट रहने की अनुमति दे डाली।

घोर बहिष्कार को सहन कर शुद्ध आचरण द्वारा त्याग और बलिदान की बेदी पर दृढ़ निष्ठा से चढ़े त्रिकालदर्शी महर्षि मतंग और प्रियदर्शी शबरी रहन-सहन मिलन आदि का संयोग आध्यात्मिकता तथा रहस्यात्मकता का मणिकांचन झलकता है। जीवन का नियमन जीवन से भी मूल्यवान है, क्योंकि नियमन के द्वारा ही उसे मूल्य प्राप्त होता है।

सामाजिक विषम परिस्थितियों में, ढाये गये तूफानी झंझावातो में दृढ़ रहकर माँ शबरी अपने जीवन से भी मूल्यवान, जीवन का नियमन सिद्धांत को आलोकित कर समान रूप से सबके लिए मार्ग प्रशस्त कर दिखाई। अर्थात् स्वयं भगवान श्री राम 88000 ऋषियों के साथ, उनकी आश्रम पर उपस्थित हो, नौ प्रकार से विनती कर समस्त ऋषियों की सभी समस्याएँ हल करा दी और माँ शबरी को मोक्ष दें विमान पर बिठा सायुज्य लोक को भेज दी।

माँ शबरी द्वारा प्रतिपादित "सिद्धान्त जीवन का नियमन" के द्वारा ही उसे मूल्यरूपी भगवान श्रीराम, भक्ति, मोक्ष और सायुज्य लोक सरलता से सहज ही में पा गयी। अर्थात् चरित्र वह ज्योति है, जो सुर्यास्त हो जाने और सभी रोशनियो के बुझ जाने के बाद भी आलोकित होती रहती है। अतः आज उसी आदर्श आशीर्वाद और दुआ को पाने का प्रयास करोड़ो-करोड़ नर-नारी माँ का दर्शन कर अपना जीवन सार्थक बनाते है। पुस्तक के परिपाद्य विषय आत्म कल्याण और भगवत प्राप्ति है। सम्पूर्ण पुस्तक में भक्ति का स्वर सर्वाधिक मुखर है। ज्ञान चर्चा भी भक्ति का रंग लिए हुए है। भक्ति का यह रथ श्रद्धा और विश्वास के चक्रो पर हुआ है।

इसी शुभ कामना के साथ महावीर मंदिर, पटना जक्शन, बिहार के प्रधान पुजारी, श्रीश्री 108 सद्‌गुरु फलाहारी बाबा सूर्यवंशीदास त्यागी जी महाराज की असीम कृपा रही और उनका कृपापात्र-

मो० : **9771597390**

संत जी.आर. हंस
पुजारी माँ मुण्डेश्वरी मंदिर भभुआ

अनुक्रम

(i) कथावाचक वनवासी
(ii) शुभ सम्मति 1
(iii) समर्पण 2
(iv) ह्रदय का उद्गार 4
(v) उद्बोधन 5

1. पूर्व अवतार दर्शन

(i) मंगलाचरण 7
(ii) प्रियदर्शी गोपा 9
(iii) सुश्री मंगला 11
(iv) अहिंसाव्रती सुभद्रा 16

2. श्रीश्री शबरी बैरागी दर्शन

(i) गुरुशरणं शबरी 19
(ii) सर्बसिद्ध शबरी 24
(iii) गुरुगद्दीनशीन 29
(iv) सरभंग समस्यायें 32
(v) शिष्य-शिष्यायें 35

3. श्रीश्री शबरी मर्यादा दर्शन

(i) बालसखा हनुमान जी 38
(ii) नवधा स्तुति सम्मान 41
(iii) वात्सल्य प्रेम प्रवाह 42
(iv) जलशुद्धिकरण स्तुति 45
(v) भविष्यवक्ता स्तुति 47

4. श्रीश्री शबरी स्तुति दर्शन

(i) मोक्ष स्तुति 48
(ii) श्री शबरी चलीसा 51
(iii) माँ की स्तुति 52
(iv माँ का आरती 53
(v) माता श्री शबरी स्तवन
(vi) राष्ट्रीय गीत 57

❖

माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण

ॐ

१६ अगस्त २००८ संत जी.आर. हंस

पूर्व अवतार दर्शन

मंगला चरण

श्री गणेश हनुमान जी, पुरण करो सब आस ।
माँ शबरी का ध्यान धरि, लीला करूं प्रकाश ।।1।।

श्री गुरुपगरज तिलक करू, सुमिरौं जय श्री राम ।
संतन को नित बंदगी, सबको करौ प्रणाम ।।2।।

जगत् जननि जगदम्बिका, जय जय सीता राम ।
सफल करो काज मेरे, दुष्टन लगे लगाम ।।3।।

भरत लखन शत्रुघ्न जाग, जाग जाग श्री राम ।
महावीर मन्दिर पटना, जागो महरो धाम ।।4।।

सुनो फलाहारी बाबा, सूर्यबंशी दास ।
गुरु चरणन रज चाहिए, बसो 'हंस' हिय खास ।।5।।

दास किशोर कुणाल जी, झा साहब भवनाथ ।
सेवादार सेवक हूँ, 'हंस' कियो सनाथ ।।6।।

जी.आर. हंस कर जोड़ विनवत आठोयाम ।
तेरे चरणन बसा रहूँ, यहि प्रार्थना राम ।।7।।

❖

गजाननं भूतगणादि सेवितं, कपित्थजम्बूफलचारूभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

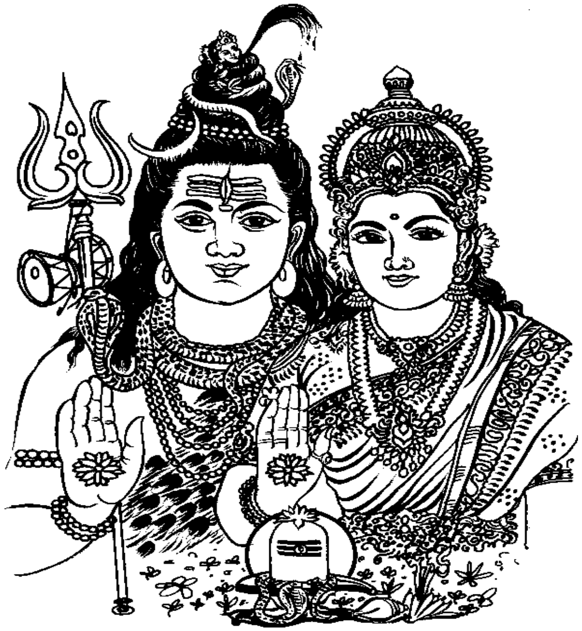

कर्पूरगौरं करूणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामी ॥

प्रियदर्शी गोपा

दो॰ पूर्व जन्म भक्तवत्सला, शरणागता धर्म रक्षति ।
इन्द्र कोपं शापविभुक्ति, श्रीराम शबरी उद्धारम् ।।8।।
चतुर्थफलं विभूषिता, चतुर्थ सर्गं पठसि नराः ।
सकल मनोरथ सिद्धयर्थं, शुभप्रदं कैवल्य धारयति ।।9।।
सो॰- पिताश्री सु मुख सुना, श्री तिनो जनम व्याख्यान ।
सु गुरु मुख हंस गुना, रचि माँ शबरी आख्यान ।।10।।

गोपा मंगला सुभद्रा, शबरी क्षमादान ।
दें मर्यादा राम बढ़े, हंस को अभयदान ।।11।।

सगुनहि अगुनहि नहि कछु भेदा । गावहिं मुनि पुरान वुध वेदा ॥
अगुन अरूप अलख अज जोई । भगत प्रेम बस सगुन सो होई ॥
जो गुन रहित सगुन सोई कैसे । जलु हिम उपल बिलग नहि जैसे ॥
जासु नाम भ्रम तमिर पतंगा । तेहि किमि कहिअ विमोह प्रसंगा ॥
राम सच्चिदानंद दिनेशा । नहि तहँ मोह निशा लवलेसा ॥
सह प्रकाश रूप भगवाना । नहि तहँ पुनि विज्ञान बिहाना ॥
हरष विषाद ज्ञान अज्ञाना । जीव धर्म अहमिति अभिमाना ॥
रामब्रह्म व्यापक जग जाना । परमानंद परेस पुराना ॥

पुरूष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि, प्रकट परावर नाथ ।
रघुकुल मनि मम स्वामि सोई, कहि शिव नायउ माथ ।।216रा0।।

सदा शिव गनेश विनवऊ, सुरसति स्वर सुधार ।
यहि आश अभिलाष 'हंस', पुरण करो करतार ।।13।।

सुमिरौ प्रथम प्रियदर्शी गोपा । द्वितीया मंगला रानी रूपा ॥
तृतीया माता शबरी सुमिरौ। ऋद्धि सिद्धि शक्ति अधिरो ॥
मातु पिता गुरु चरणन सुमिरौ । सभा संत मुनिज्ञानी सुमिरौ ॥
डिह सायर पितर सुमिरौ । सियाराम हनुमान सुमिरौ ॥
इन्द्र महाराज सुमिरौ सभा में । कथु कथा इन्द्रासनी प्रभामें ॥

भक्त वत्सला गोपा रहती । रूप गुण शील न्याय गहती ॥
उदारता की अचूक स्फूर्ति । स्व तेज प्रकाश प्रकाशित मुर्ति ।
तीनो लोक चौदहो भुवन में । विचरति स्वतंत्र भगवत शरण में ॥

सुप्रिय समदर्शी गोपा, हरि ऊँ कथा बखानि ।
त्रिभुवन सुघरि भगवती, दर्जा पाई हर्षानि ।।14।।

भगवत चर्चा भक्तो से करती । सुर नर मुनि गंधर्व दुःख हरती ॥
प्रियदर्शी गोपा सर्वत्र राजती । दिव्य शक्ति ज्ञान साजती ॥
हरि ऊँ तत्सत् गुंजै नारा । सर्वत्र भगवति होवे जयकारा ॥
संतन बीच रौशनी पसारा । पापी दुष्टन किया उद्धारा ॥
मृदुल ममता वर्षाती माता । उपकार न भाजी डाल विधाता ॥
ऐश्वर्य देख इन्द्र कांप उठा । भरे दरबार गोपा से रूठा ॥
रोक लगा ताहि धमकावा । रहो सीमा अन्दर कहि समझावा ॥
नहि उर अन्तर गोपा समाया । हरि ऊँ कथा गाई गाय सुनाया ॥

खचाखच स्वर्ग भरा, कही न जगह दिखाय ।
देख तमाशा इन्द्र डरे, क्रोधवंत हो जाय ।।15।।

गोपा महिमा रहे सब गई । तब सुरपति को गुस्सा आई।।
नहि सोच विचार किया मानी । द्वेश बस साप दिया भवानी ॥
बहुत बुझाया रूकी नहीं । जा मृत्युलोक तू सरो कही ॥
इक युग तक मलेच्छ रहाई । बार-बार जन्मेगी जाई।।
त्रेता युग में ले अवतारा । सुनलोवे है साप हमारा।
दुष्ट बड़ी है नीच गवारा । सुरपति वचन न पाई पारा।।
आकारण साप जब सुनि भवानी । अनुनय विनय किन्ही वह ज्ञानी ॥
देन लगी शिव शक्ति दुहाई । कारण कवन नाथ गुस्साई।।
सब मर्यादा राउर राखी । संतन चरणन बंदगी चाखरी।।
पैरन गिरी चरण लपटाई । सुरपति गुस्सा में रहा छाई।।

शिव शक्ति तब प्रकट हुए, हाल गये सब जान।
सुपरति को समझाय कही, गोपा को दी ज्ञान।।18

सुखती वचन न मिथ्वा होई। तेरे सम नहीं ज्ञानी कोई।।
भक्त न तेरे सम कहलाई। जब जब जन्म धरोगी जाई।।
सर्वज्ञान सुसम्पन्न रहाई। बिचरत रहो सदा सुखदाई।।
बाद विवाद में आवै कोई। मेरा ही नित ध्यान लगावै।।
अटल भक्ति मेरी तू पावै। मेरा हीनित ध्यान लगावै।।
कुछ दिन वहाँ पर वास करावै। सतयुग अंत समय जब आवै।।
सुरपती बचन नहीं खाली जाई। ये मर्यादा शिव बचाई।।
शिव भक्त बड़ा गोपा को माना। भयो संग भवानी अन्तर्ध्याना।

अटल भक्ति मेरी मिली, हो जाये उद्धार।
एक युग के वाद में, फिर आवे दरबार।।19।।

उर उपजा दया क्षोभ ग्लानी । वापस साप न होय भवानी ॥
द्वितीया जन्मो रानी मंगला । अखण्ड ज्ञान महि ज्योति जला ॥
तिहुपुर मंगल मोद रचावै। सुश्री भक्त मंगला कहलावै।।
तृतीया शबर बाहु घर जन्म धरावै। सुभद्रा शबरी नाम वहाँ पावै।।
शुभ सम्मता शबरी ज्ञानी भंडारा। मानस लीला राम सहारा।।
नौ स्तुति श्रीराम सुधारा । तेरे जूठन बसे अमृत धारा ॥
पग अगुष्ठ ऋषि ताल सुधारो । गुढ़ रहस्य दें राम उबारो ॥
अंचल महंथ की गरीमा बढ़ाई। श्रीराम पताका दी फहराई।।

वरद हस्त श्रीराम का, पड़ि तुअ शीश हर्षाय।
योग अगिनि मुक्ति गोपा, कीर्ति तिहुपुर छाय ।।16।।

इन्द्र साप शीश उठाई । तजि इन्द्रासन मृत्युलोक आई ॥
इहाँ-उहाँ वो भटकत धाई । संत मिले हरि कथा सुनाई ॥
प्रथम जनम का कथा सुनावा । शिव गणेश शारद जेही गावा ॥
सुत सनकादिक नारद बखाना । पितु अरू गुरु से निज हंस सुनि काना ॥
श्री शबरी चरित्र मानस रचि कोरा । आचार्य किशोर कुणाल से हंस निहोरा ॥
हरि अनंत हरिकथा अनंता । वेद पुराण श्रुति गावही संता ॥
चूक क्षमा मोरी करहु सुजाना । होय प्रमाद बस भूल न धरहु ध्याना ॥
निज बालक जानी क्षमा करिहहु । भूलि अक्षर सुधार शरण निज रखिहहु ॥

बोलो सीताराम सीताराम सीताराम ।
जय राधे श्याम जय जय घनश्याम ।।17।।

❖❖

सुश्री मंगला

सत्त्वशुद्धिकरं नाम नाम ज्ञानप्रदं स्मृतम । मुमक्षुणां मुक्ति प्रदं कामिनां सर्वकामदम् ।
सर्व मंगल मांगल्य मंगलाव्रत रक्षयति च । भूक्तिमुक्तिप्रदं दिव्यं हरि ऊँ कीर्तनम् ।

जगत् गुरु है महिसुर, महिसुर गुरु विरांगी ।
तिर्थो में तिर्थ बड़ा, संत पग अनुरागी ।।18।।
परमाथ के कारण, साधुन धरा शरीर ।
जगत विपदा हरि हंस, आपु हुए फकीर ।।19।।

राम लखन वेष साधु समाना। संत चरण वंदी विप्र हनुमाना।।
सब धर्मो से धर्म समता बड़ा। लिये मुक्ति परमार्थ कुंजी संत खड़ा।।
वृक्ष न कबहु फल को खावै। सरवर नीर कभी संचि न भावै।।
समता समतुल्य पर मारथी लेघा। संत सुरज सर तरुवर मेघा।।
परमारथ कोटो सब आये। धर्म पंच में समता पाये।।
नित संयम सतसंग में पाई। नियम से क्षार शब्द मिल जाई।।
मन से जो सतसंग करावै। कोटि कोटि फल वह नर पावै।।
हरि के भजे से हरि अस होई। जाति-पांती पुछे नहीं कोई।।
प्रातः स्मर्णिय पिताश्री थाती । हरि ऊँ 'हंस' बाची दिन राती ।।
गोपा कहि कथा बहुभाँती । रानी मंजूल शोक मिटाती ।।
प्रियदर्शी कांटो यम फाँसा । पुत्रि कामना रखि अभिलाषा ।।
बार अनेकहु ध्यान लगावा । सुरत सहदानी गोपा पावा ।।
मंजूला कोख गोपा आई । धान्य धन ऋतुए हर्षाई ।।
मौसमी फल रहे गदराई । जन मानसहु आनंद छाई ।।
सूनि गोद हरियर रानी भयो । धनदान प्रजा सम्मान दयो ।।
एक मास नौ मास बिताया । दसवा दसवी प्रकटी माया ।।

शरद पूर्णिमा प्रकटसी, लिए शान्ति अनमोल ।
'हंस' कीर्तन गुंज रहा, हरिऊँ हरिऊँ बोल ।।20।।

हृष्ट-पुष्ट सुन्दरी अति बाला । चन्द्रमुखी शुभ लटघुघुराला ।।
नयन नक्स कोमल कपोला । प्रस्फूटित प्रभा अधर चढ़ि बोला ।।
अद्भुत कन्या गोद उठाई । पयपान करा मातु हर्षाई ।।
सुमंगली साजी जुड़ावती छाती । कन्या बढ़ै बढ़ै दिन राती ।।
महोदघि तात ताहि अपनावा । लाड़-प्यार सम्मान जतावा ।।
नित मंगल योग दम्पति पावै । सवा सेर सोना दान लुटावै ।।
कुशाग्र बुद्धि सद् व्यवहारा । मनोहारी खेल खेलि उदारा ।।

अनेको करिष्माकरि उपकारा । सुश्री मंगला नाम उच्चारा ।।

दुखियन सु दुआ बांटती, वह बदली तकदीर ।
आ शीश झुकाते दर पे, राजा रङ्क फकीर ।।21।

होवहि मंगला जयजयकारा । मिली प्रसिद्धि हरि ॐ सहारा ।।
कीर्तन भजन करती बाला । बांटी स्नेह सिक्त फूल माला ।।
धिरे-धिरे मंगला हुई किशोरी । भई बिटिया व्याहन चिन्ता थोरी ।।
नृप राहुसुत रूक्म वर पायो । शुभतिथि लगन शोधि धरायो ।।
राजी खुशी तैयारी बनाई । सबके हिय मुद मंगल छाई ।।
देखी अतिशय दुःख पाई सपना । विवाह डोली कोहबर अपना ।। फँसी
गृहस्थाश्रम मति भोरी । थर-थर कांपन लगी किशोरी ।।
गुलाम की चीरसीऊँगी । नहि आजाद जिन्दगी जीऊँगी ।।
नही ऐसा सोच न सकती । नही छोडूगीं निज भगती ।।
मंगला अति घबड़ाय जगी । इत उत चितवती अनुराग पगी ।।

माता श्री के मुख सुनि, निज शादी की बात ।
अतिशय दुःख रोई मचा, 'हंस' गजब उत्पात ।।22।।

मंगला सोच सोच घबड़ाई । पितासन आई विरोध मचाई ।।
नही हरि ॐ कीर्तन छोडुगी । नही व्याह कोहबर जाऊँगी ।।
अंसुवन धार मंगला बुझावै । मातु पिता बहु विधि समझावै ।।
गुरु दुर्वासा डांटी रिझावै । ऊँच-नीच घाट-बाट दिखावै ।।
शादी करि संसार बसाओ । पितु ऋण से तू बाप बचाओ ।।
सत्य शपथ गुरु कहती तोही । है शादी नही करना मोही ।।
तुम जाओ निज आश्रम ताता । बार बार क्यों मोहि सताता ।। बार
बार मुनिवर अवरोधा । कन्या बचन सुनि उपजा क्रोधा ।।

अरे कुलच्छनि पापीनि, होय जड़मति अमान ।
घोर साप दें चले ऋषि, अति क्रोधवंत अपान ।।23।।

रूपवती तू करी उपहासा । अग जग तोर होई परिहासा ।।
मातु पिता तब किन्हीं निहोरा । समुझि निज बालक तजि बचन कठोरा ।।
बर्रे बालक नहि दोष गोसाईं । कृपा करहु गुरु देव की नाई ।।
दया लागी मुनि युक्ति बताई । सत् चित आनंद ज्ञान लखाई ।।
राम दरस होई है कल्याना । रही अचल ज्ञान साप अवसाना ।।
असुवन धार मंगला बुझावै । मातु पिता बहु विधि समझावै ।।
कवनेहु यतन नहीं मंगला राजी । कटुक बचन माँ बोली साजी ।।
वह कौन यार तोहि दिल भाता। कौन देश कहाँ जोड़ी नाता ।।

सो सब भेद मोहि बताओ । जंगल नगर खोजि वोहि लाओ ॥
इतना सुनत विकल भई बाला । ग्रसन चहसी जिमि राहू कराला ॥
ग्रह ग्रहित पुनि बात बस, सो तेहि बिछी मार ।
ताहि पियाइए बारुनि, कहहु काह उपचार ।।24।।
जूटी गाँव नगर पुरवासी । समुझाय हारी नहि मानी उदासी ॥
गिरे मातु पिता चरणन लोटी । उतरीन करो मोहि सुनु बेटी ॥
दुअरे आई अब तोरी बाराता । कि चढ़ो डोली या मारो मोहि लाता ॥
मजबूर मंगला अरज लगाई । वर्ष बारह सदाव्रत चलाई ॥
साल अंत तिर्थाटन जाऊँ । गज पाँच सौ दूरी बस्ती रहाऊ ॥
अंत समय जो चाहे विधाता। वही मंजूर मोहि सुनु ताता ॥
शर्त निबाही उत्रिण हो जाओ। या मोहि मारी स्वर्ग पठाओ ॥
कन्या कठोर हठ सुन्किाना । हारे कवि कोविद विद्वाना ॥
समय कुसमय बिचारी, जनवास खबरी जनाय ।
प्रभु लीला अपरम्पार है, सो कछु कहि न जाय ।।25।
संदेशा सुनि वरपक्ष आयो । है शर्त मंजूर ताहि अपनायो ॥
विवाहोपरान्त शर्त निवाही । निज पुर दुर दुलही रखी शाही ॥
सुखमय सब संसाधन दीन्हो । सादगी जीवन दुलही गहि लीन्हो ॥
निवृत नित्य क्रिया बनाई । सदाव्रत जप उपवास रहाई ॥
एक समय रैन भोजन पावै । दुखियन दुःख हरि दुआ बरसावै ॥
सवा सेर सोना नित दान लुटावै । यहि विधि सकल सदाव्रत बनावै ॥
साल गिरह तिर्थाटन जाई । जनमानस सेवा पुण्य कमाई ॥
खान पान सेवा बंदगी बरसावै । अरसठ तिरथ संत चरणन पावै ॥
हरि ॐ कीर्तन साजती, बांटती फूल अनेक ।
गिरह अंत तिर्थाटन जा, दुखियन करि अभिषेक ।।26।।
कई साल गयो बिति एहि भांती । बारहवे तिर्थाटन रचि पाँती ॥
देखि प्रिया मुख आभा बिचिला । दुध सी धवल अति सुघरी मंगला ॥
स्वान दृष्टि सम ताहि निहारी । समुझि अभिप्राय बचन उच्चारी ॥
आत्म निवेदन तिर्थाटन राजो । गाँव नगर कुटुम्ब सब साजो ॥
हुक्म नारि नागवार सम लागे । जिमि फुफुकारत नागिन देख भागे ॥
छकि-छकि जाम पिऊँ तेरी साकी । गयल माघ उनतिस दिन बाकी ॥
प्रति बंध कड़ी तिर्थाटन पर्दा । लगावै नहि नजर सुघरि पर कोई ॥
मेरी सब कामना पूरण होई । सेना संतन उड़ि सोनहुला गर्दा ॥
कठोर व्यवस्था के तहद्, दी तम्बू तनवाय ।
गंगाघाट से महल तक, घेरा छतरी लगवाय ।।27।।

मंगला चली तीर्थ नहाने । तम्बू गर्मी लगि उमश बढ़ाने ॥
भयो विकल सब तम्बू भीतरा । जिमि फूल गद्दा सड़क बीच कचरा ॥
मरणो समान उमश भईभारी । गिरती उठती विकल चली नारी ॥
गंगा घाट पहुँची निहारी । दुर्लभ भई दर्शन संत नर नारी ॥
अरू किया दुर्लभ सब तम्बू माया । निर्गुण ब्रह्म ध्यान लगाया ॥
बहु विधि पूजन अर्चन किन्हीं । गंध अक्षतादिक अंजली दिन्हीं ॥
जय जय जय श्री गंगा माई । त्रिभुवन सुन्दरी होहु सहाई ॥
तेरे शरण दर्शन को आई । लेहूँ आज मोहि गोद उठाई ॥

देवी सुरेश्वरि भगवती गङ्गे त्रिभुवनतारिणी तरल तरङ्गे ।
शंकर मौलिविहारिणि विमले, मम मतिरास्तां तव पदकमले ॥
करि शुभ पूजन स्तुतिरत, ध्यान में रहि समाय ।
आर्तनाद विनती सुनि, प्रकटि गंगा माय ।।28
हहरात शब्द सुनि कराला । जलमध्य तरंग उठी विशाला ॥
अद्भूत रूप ग्राह संवारी । प्रकटी गंगा दुःख ताहि निवारी ॥
करि दर्शन मंगला सुखमानी । कीर्तन करती जोरी जुग पानी ॥
आज अंतर बाहर छुटा आराती। लेती दुआ अरु फूल चढ़ाती ॥
बढ़ता कदम चली ऐहि भाँती । जिमि थल पर चली भजन गाती ॥
गंगा मातु शरण अपनाई । सिद्ध लोक राह दिखाई ॥
ले गंगा लाभ उड़ी गगन में । आलोकित पथ हरि ॐ शरण में ॥
दियो उपदेश दुलहा निहारी । हरि ॐ शरण रहो व्रतधारी ॥
नर पशु गुरु पशु वेद पशु, और जगत् व्यवहार ।
वाहि मानुष मानियें, जाहि विवेक विचार ।।29।।
नर पशु वह जो भलाई न कीन्हा । करि संग्रह धन माया चीन्हा ॥
दुसरो का हक हड़प खाता । पशु मानुष दुखिया रोज सताता ॥
लालसा अति संग्रह पाप दिवाना । उपकार नेक नैतिक ज्ञान न जाना ॥
हरि ॐ कीर्तन भूलि मर्दाना । अंत रौरव नरक गिरा सयाना ॥

गुरु पशु वह जो दम्भी होवै । राग द्वेश ईर्ष्या में खोवै ।।
पर धन हरै लौक रीति भूला । ठग विद्या डूबावै मानुष फूला ।।
वेद पशु जो सिद्धान्त भुलाई । गीता पुरान कुरान ठुकराई ।।
दूसरो को हरदम कष्ट पहुँचाई । 'हंस' शुक रटंत विद्या है भाई ।।
गोरूआ संगत जगत रहावा । जो आपसी व्यवहार बनावा ।।
ताहि विवेक विचार न भावा । सो पशुवत व्यवहार कहावा ।।

मानुष तन उपकार का, और भजो हरिनाम ।
'हंस' यहि छोड़ जायेगा, नश्वर जगत तमाम ।।30।।

उपदेशत ही अन्तर्ध्यान लही। संसार चक्र सो भ्रमत रही।।
दिन्ही पिता मोहि जो उपदेशा। सो संतन बीच कही संदेशा।।
दूसरा जनम का हाल सब गावा। आगे सुनहु जो पिता सुनावा।।
कथा श्रवण करे जो कोई। तापर सहाय शिव शक्ति होई।।
जय जगदम्बा उमा भवानी। जय शिव शम्भु औघड़ दानी।।
जय सिय राम जयजय हनुमाना। संकट मोचन कृपानिधाना।।

तरुवर सरोवर संतजन, चौथा वरसे मेह।
परमारथ के कारणे, भारो धरिया देह।।

थी इन्द्राशनी त्रिकालदर्शी । स्व तेज प्रकाश रहि प्रियदर्शी ।।
इन्द्र दुर्बासा दोउन शापा । जगत् बसि घसि हरि ॐ जापा ।।
ताहि देई उपदेश भवानी । सोणमणि शबरबाहु पहिचानी ।।
तातमात पग कीन्हि परनामा । जाके उर बसी कोख जामा ।।

❖❖

अहिसाव्रति सुभद्रा

प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं, पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च ।
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्ति, गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम् ।।

शबरी लीला सु दर्पण, रक्षा करो हनुमान ।
बल बुद्धि विद्या दे मोहि, हरहु सकल तूफान ।।31।।

नानाश्री शकुन सु बलवाना । कश्यप गोत्र भील राज महाना ।।
नानी सुजाता मृदु भाषी । रूप गुण शील धर्म की राशि ।।
करमचट गिर वियावान वासी । सोण तीर भील धर्म प्रकाशी ।।
सफल शिव साधक भक्त अच्छा । दीन दुखियो की करता रक्षा ।।
सोणमणि जब भई सयानी । शबरबाहु वर ढूढ़ा ज्ञानी ।।
शुभ लगन तिथि ठहरावा । एकलौती बिटिया व्याह रचावा ।।
आदर सेवा बारातीन्ह दीन्हो । नयन पुतरी सा विदाई कीन्हो ।।
मातु पिता पग रज उठाई । पालकी बैठि ससुराल आई ।।

भक्तवत्सला पतिव्रता, गहे वेद की रीति ।
सलज सुशील सुबुद्धि अति, पति सेवा में ।।32।।प्रीति ।।

भीलराज शबरबाहु सयाना । दानी मानी ध्यानी ज्ञाना ।।
रोज सतसंग दरबार लगाता । दीन दुखियो को भोजन कराता ।।
सुखमय जीवन दम्पति जीते । यहि विधि गयो बहु दिन बीते ।।
सुपुत्र प्राप्ति चिन्ता उर जागी । सोणमणि पति सन अनुरागी ।।
गुरुवर से जा दुखड़ा सुनाये । आशिश पाई लौट गृह आये ।।
पति सेवा नित करती बनाई । रात एक सपना देखि हर्षाई ।।
हाथी पर बैठे गुरु महाराजा । मोहि फल दे कहे खा जा खा जा ।।
निंद जगी फल खोजन लागा । नही गुरु नहीं हाथी है आगा ।।
शिव शम्भु का ध्यान लगावा । प्रस्फूटित किरण कोख पावा ।।
एक मास नव मास बिताया । दसवा दसवी प्रकटी माया ।।

समय पाय तरूवर फलै, फल लागै अतिनिक ।
गुरु कृपा भक्ता जनमी, लिए एकलौति लिक ।।33।।

जनमी शुभ ब्रह्म मुहुर्त अलबेला । पुनम मधु मास सूर्योदय वेला ।।
सुन्दर सलोनी बिटिया पाके । कियो लालन पालन स्नेह जताके ।।
पढ़त सुनत शुक रटने लागा । राम राम कहि राम के आगा ।।

बचपना नाम सुभद्रा आता । पुनः भक्तिमति शबरी विख्याता ॥
बाल ब्रह्मचारी है सिद्धि कुआरी । दाये पग अंगूठा अमृत धारी ॥
नामकरण करि गुण बखाना । रौशन नाम काम नहि आना ॥
पढ़ती गृहशाला भई किशोरी । मातु पिता जागी चिन्ता थोरी ॥
व्याह योग्य भई बेटी मोरा । रिस्तेदार रिस्ता जोड़न निहोरा ॥
सुन्दर वर ढुढ़ करि पक्का रिश्ता । विवाह लगन तय धरि कर मिसता ॥

तीन मन की गठरी है, समधि वर वो बारात ।
धन दौलत औ कन्या दो, मद्य मांस कैनात ।।34।।

वरपक्ष मांसाहारी भोज फरमाया । शर्म से झूकी सहमति जताया ॥
शुभ लगन निकट जब आया । बलि के निरीह पशु मंगाया ॥
हरिन मेढ़े मीन सांभर बकरा । अनेको किस्म पशु पकड़ा जबरा ॥
पशुओ से भर गयो घर दरबारा । सुभद्रा सोच सोच मन हारा ॥
एक सखी बोली मुस्काता । व्याह पशु बली लाये ताता ॥
तू हमसे राज छिपाती हो । क्यों छिप-छिप मांस खाती हो ॥
सखि व्यंग्य सुनि बान सम लागी । गुस्सा में वह घर को भागी ॥
धरि माथ बाल बिखेर डाला । भाग्य कोसति सोचति बाला ॥

श्री भगवत भक्ता सुभद्रा, अहिंसा प्रेमनि खान ।
माँ से किस्सा सुन डरि अब, क्या होगा भगवान।।35।।

मेरी शपथ माँ सच सच बताना । निरीह पशुओ पीछे क्या ठाना ॥
सुन बेटी साच बताऊगी । तुमसे नहि राज छिपाऊगी ॥
कल होगा जब तेरी शादी । रहा बाराती पशुओ की बरबादी ॥
तेरो हाथ पीला जब होगा । घराती बाराती लगी सामिस भोगा ॥
सुनी माँ की अटपट बानी । सुभद्रा लगा झटका तुफानी ॥
थर थर कांपन लगी किशोरी । पुनि माता से बोली कर जोरी ॥
हिंसा न करो व्याह में माता । जघन्य पाप से रोको ताता ॥
महान आत्मा पहचान मानव । जीव रक्षा करो बनो न दानव ॥

बाप बेटी दोनो अड़े, किसका राखू मान ।
जाये धरम पति डाटत, पाप जो तजि परान ।।36।।

अहिंसा से बड़ा धर्म न कोई । हिंसा से पाप बढ़े दुःख होई ॥
अहिंसाव्रती रहो मोरी माता । पाप दोष दुःख होई निपाता ॥
आजीवन जो मांस न खाया । लाखो यज्ञ का पुण्य फल पाया ॥
माँ सम्मुख सुभद्रा संकल्प लियो । अहिंसा परम धर्म जा तात दियो ॥

सुश्री दृढ़ संकल्प जाय सुनावा । हरष-बिशाद तात दुःख पावा ॥
मैं बिटिहा हूँ नहि बस मोरा । वर पक्ष सामिष भोज निहोरा ॥
तात मातु बरजन जब लागे । नहि झूकी शुभ संकल्प आगे ॥
व्यथा सुनि द्रवित महतारी । अब नहि माने पिता तुम्हारी ॥

शील रतन सबसे बड़ा, सब रतनन की खान।
तीन लोक की सम्पदा, बसी शील में आन।।

माँ की बचन कठोर सुनि, उठी सु तड़फड़ाय ।
जघन्य पाप होगा अब, शादी दू ठुकराय ।।37।।

नाही कटिहै भेड़ा बकरी, नही ग्राम कुकुट सांभर मीन हो ।
निज नाही रहबो पितु घर अंगना, चलबो जंगल एक नवीन हो ।
शादी ठुकरैबो जंगल जैबो, रखबो जीवन प्रभु अधीन हो ।
धुनि रमैबो हरि गुण गैबो, 'हंस' करबो भजन छलहीन हो ।
शादी न करबो रहब ब्रह्मचारी, अहिंसा ध्वजा फहराय हो ।
जीव जीव मारी मुआवत खात, गया मानव धर्म नसाय हो ।
दील उदार मानव ममता पूजारी, क्यो मानवता नर भूलाय हो ।
पूर्वज कमाई खोई खोई अपना, आज वही नर राक्षस कहाय हो ।
अहिंसा के झंडा जगत् फहरैबो, रखबो मानव धर्म को बचाय हो ।
जीव जीव को खाये धर्म नहीं है, देबो चेतन पुरूष को जगाय हो ।
चौरासी अंगूल का निज तन पायो, मानुष बकरा गज झिंगा लखाय हो ।
सबके एक हरि है सृजनहारा, 'हंस' उपकारी भाई भाई साप्रेम बरसाय हो।
जीव जीव मत मारो खाओ, उपकारी जीव सब भाई-भाई कहाय हो ।
मांसाहारी शेर स्वान सियार जबड़ा में दांत नुकीला दिखाय हो ।
सांभर भेड़ मानुष बकरा साकाहारी, जबड़ा में दांत बराबर बनाय हो ।
प्राकृतिक विधान देखी सोचो समझो, बहुत दोनो में अन्तर लखाय हो ।
सांभर भेड़े बकरा घास चरे, मानुष शाकाहारी पंगत भोजन पाय हो ।
जगत् में चेतन शील प्राणी है मानुष, नेक नैतिक उदार सहाय हो ।
तप चूक राज राज चूक नरका, गया स्वारथ में सब नसाय हो ।
अबकी पागा ना परे तो, फिर भटकत चौरासी जाय हो ।

चौरासी योनि तन है, अंगूल नाम लखाय ।
मानवता बदतर गिरी, जीव जीव को खाय ।।38।।

मेरे हीत के कारण, होगा पाप कठोर ।
चलु फहराय शांति ध्वज, 'हंस' रात या भोर ।।39।।

॥ इति संत जी.आर. हंस कृत 'माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण' पथम सर्ग पूर्व अवतार दर्शन समाप्त ॥

❖❖

श्रीश्री शबरी बैरागी दर्शन

सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी, नारायणि नमोऽस्तुते ॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा ।
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितम्विहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व ।
जय जय करूणाब्धे श्री महोदेव शम्भो ॥

जय गणेश गौरी सुवन, जय स्वरसती माय ।
द्वितीय सर्ग शबरी का, (भूलि) अक्षर देहू बताय ।।40।।
सुनलो चतुर सुजान, मांस आहार नही करना ।।टेक।।
मांसाहारी नही कही ठीकाना, चौरासी में आना जाना ।
वह पड़े नरक की खान, मांस आहार नही करना ।।सुन०।।
मांसाहारी होता हिय का अंधा, खुब करे संसार का धंधा ।
वह क्यो करता अभिमान, मांस आहार नही करना ।।सुन०।।
भक्षि मांस माला क्यो सटकावें, मनवा चहुँ दिशि फिरता जावे ।
वह यम का बने मेहमान, मांस आहार नही करना ।।सुन०।।
शाकाहारी नर निर्मल काया, लाखो यज्ञ सम पूण्य फल पाया ।
वह साक्षात 'हंस' नर में नारायण, मांस आहार नही करना ।।सुन०।।
गाते गाते गुन गुनाते, चल पड़ी वह ओला में ।
निरत निरन्तर ध्यान लगा, शिवशंकर दानी भोला में ।।टेक।।

चली दुर्गम राह भजन को गाती । बाघ भालू भय ध्यान न लाती ।
कठिन राह वह चढ़ती जाती, केहरि निवास खोहा में ।
निरत निरंतर ध्यान लगा, शिवशंकर दानी भोला में ।।गाते०।।
देखी कन्या शेर गुर्जन लागा । हिला सिंहासन शम्भु जागा ।
भक्त रक्षा हीत शिव दौड़ चले, संग पार्वती हमजोला में ।।निरत०।।
भूत बैताल सुभद्रा घेरा, नाना भांति पंथ डाले फेरा ।
भूतनाथ संग साथ चले, सब बिपदा हरे निज झोला में ।।निरत०।।
सुरक्षित कन्या 'हंस' पहुँचाये । जहाँ संत रहे वह राह दिखाये ।
दें गुप्त आशीश शिव शक्ति चले, हरि ॐ नारायण टोला में ।।निरत०।।
हे हवाले शबरी हे हवाले शबरी ।
चाहा राम तो होइ जा सत्गुरु के हवाले शबरी ।।टेक।।
माँ शिवाशिव शक्ति आई । दिहली सब स्वप्न मे समझाई ।
आगे अँधेरा है मन का दीया जलाले अगरी, हे हवाले शबरी ।
चाहा राम तो होई जा सत् गुरु के हवाले शबरी ।।हे०।।
कहाँ जा रही हो जानेवाली । तेरे निरर्थक न जाये सफर आली ।
आगे जो मिलेगा ताही शीश झुकाले डगरी, हे हवाले शबरी ।।चाहा।।
ये जीवन सफर अंधा सफर । बहकना कम भटकने का डर ।
बिना सत्गुरु के ना पैबो जीवन निराले नगरी हे हवाले शबरी ।।चाहा०।।
शबरी सोच-सोच घबड़ाई । निर्जन वन कौन मिलेगा आई ।
अखण्ड दीप जलाके करिहै 'हंस' उजाले सगरी, हे हवाले शबरी ।।चाहा०।।
जय गणेश गिरिजा सुवन, शिव शक्ति हिय जगाय ।
चलु भवानी आश 'हंस' शंकर होहु सहाय ।।41।।

माता पिता पति सुत मित्र । सभी है मिथ्या स्वप्न विचित्र ॥
गहन वन विजन पहाड़ प्रदेश । जहाँ न पाप-ताप का लेश ॥
दोऊ कर जोरी हिय अनुरागी । मातु पिता के चरणन लागी ॥
विरागी मन संकल्प लीन्हा । आधी रात गृह त्याग दीन्हा ॥
चली मन ही मन करि परनामा । उमा सहित शिव लेकर नामा ॥
पितु गृह आंगन अचल सुख धामा । देकर तिलांजली चली ललामा ॥
अपयश की चिन्ता छोड़ चली । अगिरिवन गह्‌वर दौड़ मचली ॥
चली दुर्गम राह भजन को गाती । बाघ भालू भय ध्यान न लाती ॥
कठिन राह वह चढ़ती जाती । शिव शक्ति स्वस्ति शेरन्ह सुनाती ॥
देखी कन्या शेर गुर्जन लागा । हिला सिंहासन शम्भु जागा ॥

निरत निरन्तर ध्यान धरि, शम्भु भवानी साथ ।
भक्त सुरक्षा दौड़ चले, लेकर त्रिशुल हाथ ।।42।।

अद्भुत शब्द सुनत शेर भागा । सुमिरण करती चली शिव आगा ॥
भूत वैताल सुभद्रा घेरा । नाना भांति पंथ डालत फेरा ॥
भूतनाथ संग साथ चले । विपदा हरी निज झोला रखले ॥
जहाँ संत रहे वह राह दिखाये । सुरक्षित सुभद्रा वहाँ पहुँचाये ॥
दें गुप्त अशीश शिव शक्ति चले । अचल आश्रय शिव प्रसाद मिले ॥
दे स्वप्न भवानी ताही समझाई । बिना गुरु कल्यान नही भाई ॥
आगे अँधेरा नही उजाले । अब भी मन का दिया जलाले ॥
करलो गुरु जो तोही मिलि जाये । वे ही 'हंस' मंजिल पहुँचाये ॥
शिव शक्ति अद्भूत दर्शन, बसहा शेर सवार।
देखी शरण सुभद्रा गिरी, हंस कराऽबार।।

सुभद्रा सोच मुद्रा पड़ी, सुस्वप्न करि विचार ।
जो जंगल माही मिले, 'हंस' वहि गुरु निहार ।।43।।

मोही परम पिता से कौन मिलावे । अखण्ड दीप वह कौन जलावे ॥
सुभद्रा सोच सोच घबड़ाई । निर्जन वन कौन मिलेगा आई ॥
लुक छिपभागती दूर निकली । जा पहुँची नारद तपस्थली ॥
कन्द मूल फल आहार करती । नाम बदल छिप रात निकलती ॥
झुमि-झुमि नारद वीणा बजावै । ठुमुकि ठुमुकि नारायण गावै ॥
हरि ॐ नारायण नारायण । भजुमन नारायण नारायण ॥
छतिसो राग रागिनि ललकार । सरगम स्वर रहे झंकार ॥
हरि ॐ नारायण नारायण । अभजुमन नारायण नारायण ॥

भगवत भजन मस्त रहे, महाज्ञानी नारद ।
हरि माया प्रेरित शबरि, चली मनाय शारद ।।44।।

नारायण नारायण सुनि हर्षाई । मुनि सम्मुख जा दण्ड बजाई ॥
हरि ॐ नारायण नारायण । भजु मन नारायण नारायण ॥
दोऊ कर जोरि किन्ही निहोरा । मिले शुभ संयोग सद्गुरु मोरा ॥
हरि ॐ नारायण नारायण । भजु मन नारायण नारायण ॥
तुही गुरु मातु पिता परिवारा । रखिहहु शरण 'हंस' करो उद्धारा ॥
हरि ॐ नारायण नारायण । भजु मन नारायण नारायण ॥

हम सेवक प्रभु विश्व स्वरूपा । तभी भक्ति भाव है यहा अनूपा ॥
हरि ॐ नारायण नारायण । भजु मन नारायण नारायण ॥

बहु प्रकार करि विनती, मुनि चरणन धरि माथ ।
शिष्या बनाके आपनो, हंस हि करो सनाथ ।।45।।

कि तुम कौन कहा से आई । मेरे भाव भजन में दखल जमाई ॥
हरि ॐ नारायण नारायण । भजुमन नारायण नारायण ॥
शबरी नाम की पहिनी पहुँची । आगम से आय निगम तन सौपी ॥
स्वप्न माही शिव शक्ति ललकारा । प्रथम मिले सोई गुरु तुम्हारा ॥
ब्रह्म मिले सोई भेद बताओ । मुक्ति सुक्ति सद् राह दिखाओ ॥
हरि ॐ नारायण नारायण । भजु मन नारायण नारायण ॥
मन में दुर्गुण कर में माला । भक्ति नही वह गड़बड़ झाला ॥
दुर्गुण त्यागो बनो उदारा । यही मुक्ति सुर पुर का द्वारा॥

उपदेशत मुनि ध्यान धरि, अद्भुत लीला पाय ।
शबरी नुर आगे 'हंस', नारद गयो भूलाय ।।46।।

हे दीन हीन पर कृपा बरसानेवाले । संसार सागर से पार उतारनेवाले ॥
तुही गुरु मातु पिता परिवारा । रखिहहु शरण हंस करहु उद्धारा ॥
सेवा यतन यदि होवे खोरी । सब अपराध क्षमहु प्रभु मोरी ॥
निज कर्म बस झेलत संसारो । जन्म मृत्यु गर्भवास निवारो ॥
संसार चक्र से मोही छुड़ाओ । जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ ॥
हूँ असमर्थ सब भेद बताओ । करो उद्धार मम ज्ञान जगाओ ॥
तेरे चरण कमल करू कोटि नमामी । अपनी शरण मोही ले लो स्वामी ॥

संतन की सेवा किये, हरि की सेवा होय ।
साधु मिले साहिब मिले, हंस न जानै दोय ।।47।।

जय सद्गुरु देवन देव वरं । निज भक्तन रक्षण देह धरं ॥
पर दुख हर सुख शान्ति करं । निरूपाधि निरामय दिव्य परं ॥
जय काल अवाधित शांति मयं । जन पोषक शोषक तापत्रयं ॥
भय भंजन देत परम अभयं । मन रंजन भाविक भाव प्रियं ॥

गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नम:।।48।।

गुरु पग पूजति हृदय लगाई । जागी चेतना मुनि मुस्काई ॥

हरि ऊँ नारायण जपि मुनिसा । शबरी ही दिन्ही बहुत आशीसा ॥
मूल मंत्र मुनि दीन्ही हर्षाई । सब गुप्त भेद ताही समझाई ॥
एक जगह नही रहहु कुमारी । भ्रमत रहऊ मैं इच्छाचारी ॥
ना कोई मोरा ठौर ठिकाना । मतंग आश्रम को करो पयाना ॥
वहाँ होई है सुनु तोर कल्याना । रहि संग गुरु का धरना ध्याना ॥

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मंत्रमूल गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोःकृपा ।।49।।

जैसी प्रीति कुटुम्ब की, तैसी गुरु सो हाये।
कहे 'हंस' ता दास को, पल्ला न पकड़ै कोय।।

गुरुमुरति परब्रह्म समाना। अचल ज्ञान वह नूर खजाना।।
जो दिल दिमाग सेवा मे लगाना। छोड़ी कपट गुरु आदेश बजाना।।
तन मन वाणी बुद्धि इन्द्रिया। वहाँ रोक लो इन सबकी क्रिया।।
गुरु सामने सदा सरल होना। पहले उठो पीछे सोना।।
गुरु भोग लगाता पीछे पावै। साधारण निज वेष रचावै।।
सदा सादगी श्रद्धा भक्ति गहना। कायदे से गुरु समीप रहना।।
हाथ हेर फेर गुरु चरण परसे। दाये से दाये बाये कर हर से।।
दोऊ कर जारी करो प्रणाम। हो विनय सरलता सुन्दर परिणामा।।

सेवा करे जो बड़े की, सुशील नम्रता धार।
यशवल आयु विद्या, बढ़ते उसके चार।।

काम क्रोध मद लोभ इर्ष्या। दम्म दर्प घृणा राग द्वेश्या।।
महो अभिमान बैर मिटाई। झूठ कपट छल छिद्र नसाई।।
चूगली निन्दा हिंसा चोरी। ये सब 'हंस' नकमहं बोरी।।
इन्हहि विहाय ब्रह्मचर्य रहु बाला। बनो गुरु परायण सबसे आला।।
गुरु आसन से निचे रहना। सदा सत्य की पहनी गहना।।
शील विनय का ध्यान रखना। खुश गुरु से प्रश्नोत्तर करना।।
तुझ पर रीझ गुरु जब जाई। परमात्म तत्व तेहि देंगे बताई।।
सत्य सब मार्ग देगाा सुलझाई। फिर परम पिता से तोही मिलाई।।

संत मिलन को जाइये, तजी मोह माया अभिमान।
ज्यो-ज्यौ पग आगे धरे, कोटि यज्ञ समान।।50।।
मतंगाश्रम रामजी, दैहहि मुक्ति आय ।

दीक्षा दे नारद चले, शबरी को चेताय ।।51।।

गुरु समीप पुनि करियो वासा । जो अति उत्कट है अभिलाषा ।
संत पग हिय राखो अपना । सेवारत रहु कुछ नाही सपना ।
शिक्षा समझो वही सफल । जो कर दे आचार विमल ॥
श्रवणामृत सुनि गुरुवानी । ऋषियन सेवा जुटि दिवानी ।
डुबत मिल्यो तिनका सहारा । दीन्हो ज्ञान गुरु मोहि उबारा ।
जो पता प्रभु मिलन प्रकाशा । खोजत चली रखी बड़ी आशा ।
गुरु नाम जपत शबरी बैरागी । अटूट श्रद्धा भजन में पागी ।
जा पहुँची महर्षि मतंग गली । सजाती अनमोल फल फूल कली ॥
नीज केश पथ बुहारन लागी । निष्काम सेवा सारी रात जागी ।
सर आश्रम पंथ स्वच्छ कीन्हो । सकल समीधा फूल धरि दीन्हो ॥

पुरित संकला देखि के, चकित मतंग महान ।
सु लाया कौन यहाँ पर, कौन करि एहसान ।।51।।

आश्चर्य चकित कोई भेद न पावै । फूल फल लकड़ा कौन पहुँचावै ॥
सरोवर आश्रम राह सफाई । अर्द्ध रात्रि कौन करता भाई ॥
छिप इसका पता लगाओ । काया अंजोर वोहि खोजि लाओ ॥
मिला तो साथ सम्मान से लाओ । है शिष्य सिद्ध गुरु सम्मान बढ़ाओ ॥
उसका सफल सब काज निराला। अद्भुत सेवा देखो विशाला ॥
कारगर कारीगर कुशल महाना । कारण आया कौन बहाना ॥
छिप छिप चेला पता लगावै । फिर भी वहि पकड़ न पावै ॥
छिप शिष्यों ने डाला डेरा । जा आधि रात शबरी को घेरा ॥

सिर गठरि कर झाडु लिए, मुख में जपति राम ।
जाय शिष्यों संग गुरुपहि, करती दण्ड प्रणाम ।।52।।

दोऊ कर जोरि खड़ीगुरु आगे । महर्षि मतंग पूछन लागे ॥
की तुम कौन कहाँ से आई । केकरा कहे कुटि करती सफाई ॥
किसके आदेश यह सब लाती । पारिश्रमिक नहि यहाँ से पाती ॥
सुनु गुरु साँच कहहु पन रोपी । गुरु नारद मोहि यहि काम सौंपी ॥
निष्काम सेवारति जो ज्ञान लखाई । अनुपम आश्रम आप पठाई ॥
शबरी नाम की पहिनि पहुँची । आगम से आई निगम तन सौपी ॥
जय जय गुरु मतंग स्वामी । तेरे चरणन कोटि कोटि नमामि ॥

अहिंसा व्रति रहु बाल ब्रह्मचारी । निष्काम सेवारत रहु तुम्हारी ।।
दृढ़ संकल्प करि आश्रम धाई । गुरु चरणन में शिश नवाई ।।
हम सेवक प्रभु विश्व स्वरूपा । तभी भक्ति भाव है यहाँ अनूपा ।।
मात तुही गुरु तात तुही, मित भ्रात तु ही धन धान्य भण्डारो।।
ईशतु ही जगदीश तु ही, ममशीश तु ही प्रभु राखन हारो।।
राव तुही हंसराव तुही, सतभाव तुही मम नैन के तारो।।
सार तुही करतार तुही, घर बार तुही परिवार हमारो।।
शरणागत पाल कृपाल प्रभो, हमको एक आस तुम्हारी है।
तुम्हरे बिन दूसर और कोऊ, नही दीनन को हीतकारी है।।
प्रतिपाल करें बिन ही बदले अस, कौन पिता महतारी है।।
सब भांति समर्थ सहायक हो, 'हंस' आश्रित बुद्धि हमारी है।।

शरण शरण तेरी शरण, शरण राखो अपनाय ।
भाव भक्ति जानू नही, दया करो गुरुराय ।।53।।

सेवा कइली यतन बनाई हो, तेरे शरण हर्षाई योगिया ।
गुरु नारद दिहले पठाई हो, श्री सतनाम लखाई योगिया ।।
कर झाड़ू सिर गट्ठर लकड़ा, अजपा जापी येही पकड़ा ।
हरि ॐ हरि ॐ बोलो साई, करो मुक्त मोहि ज्ञान लखाई ।।
करती आश्रम घाट बाट सफाई हो, निःस्वारथ सेवा बनाई योगिया ।
रहु आजीवन ब्रह्मचारी हो, मोरी इज्जत बचाओ योगिया ।।
कार्मिक वाचिक मांसिक तापा, 'हंस' सपनेहु न तोहि व्यापा ।
तेरे दर्शन को अहै एक दिन रामा, दृढ़ होई जपत रहो हरिनामा ।।
सफल जीवन मुक्ति पाई हो, आशिष बरसाई योगिया ।
अचल दिहले ज्ञान लखाई हो, शबरी को समझाई योगिया ।।
आश्रम अनुपम गीत राची, थिरक-थिरक गुरु आगे नाची ।
हरि ॐ हरि ॐ कीर्तन खांची, गुरु शिष्य सब एकहि सांची ।।
गावै कीर्तन गुरु गोसाई हो, स्वर में स्वर मिलाई योगिया ।
'हंस' गद्‌गद् शबरी हो जाई हो, गुरु चरनन लपटाई योगिया ।।

मोर जिभिया रटले गुरुवर नाम ।
चाहे ले अंखिया देखे राउर धाम ।।
हमके टहलुआ आपन बना लेत ।

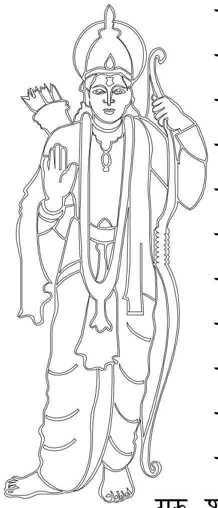

सेवा में लगा के मोर भाग सवार देत ।।
चाहेला हथवा कइल राउर काम ।
मोर जिभिया रटले गुरुवर नाम ।।
मनवा डेराला ना पहाड़ देखिके ।
शेरवा के केतनो दहाड़ सुनि के ।।
देहिया देखे ले नाही छाँव बा की घाम ।
चाहेले अँखिया देखे राउर धाम ।।
बाल ब्रह्मचारि व्रत आसरा लगवली ।
महर्षि मतंग नाम गुरुजी से पवली ।।
रउवे शरण में बीते जिनगी तमाम ।
चाहेले अँखिया देखे राउर धाम ।।

गुरु शरण शबरी रहिके, तमन मन को रहसिाध।
नैतिक शिष्ट चित्त, 'हंस सु गुरु आराध।।

सु शरणागत रक्षक रहाये। गुरु सुदया दृष्टि बरसाये।।
मतंग आश्रम वन रहती मीटा। निष्काम सेवा गुरु प्रेम जीता।।
शुद्ध चरित्र सुकर्म सुलेखा। अनमोल सेवा श्रद्धा देखा।।
शबरी नाम सु अपनाय लियो। बेटी सा उसको प्यार दियो।।
भवानी कही दीक्षा दीन्हा। थाल परोसा दक्षिण लीन्हा।।
शरणागता परखि सत्यवादी। आश्रम वन उपवन आजादी।।
गुरु सम्मुख होय सेबा करती। स्वच्छ हृदय आजाद रहती।।
गुरु आश्रम मर्याद निराला। गुरु पत्नि पग नित सेवती बाला।।

निज कर सुधारी चौका, प्रभु भोजन जिमाय।
गुरु सानिध्य दिव्य दरस, हंस सुलभ हो जाय।।

बाबाजी जब जब पधारे। शबरी उनके चरण पखारे।।
खुश भये आशीष उच्चारे। जय हो कहि कह खुब दुलारे।।
भोला भला रहती नादाना। बड़ी भग्यवान है तुझे जाना।।
अभी किसी को नही बताना। तेरे कर में छिपा खजाना।।
तेरी हस्त रेखा साच बताता। साक्षात ब्रह्म ज्योति इठलाता।।
सुरेश महेश दिनेश विधाता। श्रुति सम्मत शास्त्र पुराण गाता।।
वह ज्योति तेरे पास पड़ी। उर बीच शक्ति प्रकट खड़ी।।
तन मन साध पकड़ लो कड़ी। 'हंस' तकदीर बनेगी इसी घड़ी।।

संतन ही में पाइये, राम मिलन कौ घाट।

सहजै ही खुली जात है, 'हंस' हृदय कपार।।

सुन शबरी इस महान देश में। साधु महात्माओ के भेष में।।
आयेंगे राम ऋषियों के द्वेश मे। वे मिलेंगे केकई सीता के केश में।।
दिन रात सांझ वा भोर। घुमते रहते है कुछ चोर।।
छल कपट द्वेश न रखना कोर। 'हंस' न होना कभी विभोर।।
साधु महात्मा का भेषधारी। चोर चुहाड़ में ब्रह्मा निहारी।।
बना लो आशीष दें सदाचारी। प्रभु सम सदा रहो उपकारी।।
आये दर्शन को पापी व्यभिचारी। परमात्म तत्व दें ताही सुधारी।।
देखो चंदन की यही मर्यादा। वैसे ही बनो 'हंस' करे फरियादा।।

प्रभुना मन्दिर ना मस्जिद में, ना काबे कैलास तय।
हममें तुम में खरब खण्ड में, सब घट व्यापत राम मय।।
जहाँ लगन है सत्य सफल है, वहाँ होगा त्रिविध ताप श्रय।।
करहौ भजन शबरी रहिहो मगन, 'हंस' देखि जग सियराम महा।

सबगे बसिये सबमें रसिये, सबका लिजिये नाम।
हां जी हां जी कहि के रहिये अपने धाम।।66।।

हरा भरा आश्रम की धरती। खुश मिजाज प्रश्नोत्त करती।।

शबरी - अंशन्ह सहित प्रकट कौन साई। कौन ग्यारहवे रुद्र कहाई।।
मंतरग - अंशन्ह सहित राम गोसाई। भरत शुघ्न लखन भाई।।
शिव रूप ग्यारह ॐमहाना। ग्यारहे अंश प्रकट हनुमाना।।
शबरी - करि नर लील राम चले वन माही। लिन्ही परीक्षा सती सिव रूप गाही।।
सती सिव रूप धरि छल भेषा। सती सिव रूप लखी शिव माँ सभ देखा।।
सत संगत है सच्चा दरवारा। सत संगत से होव उद्धारा।।

चल स्वरूप जो वन सुचल, चल वैभव चल देह।
चला चली के वक्त में, भला भली कर लेह।।67।।

शबरी - जल से पतला कौन है, कौन भूमि से भारी।।
कौन अग्नि से तेज है, कौन काजल से कारी।।
मतंग - जल से पतला ज्ञान है, और पाप भूमि से भारी।।
क्रोध अग्नि से तेज है, और कलंक काजल से करि।।
शबरी - कौन समुद्र जल बिना, कौन वृक्ष बिनु पात।
कौन परवेरु के पर नहीं, कौन मरत बिनु काल।।
मतंग - शब्द समुन्द्र जल बिना, सुरति वृक्ष बिनु पात।
पवन पखेरू के पर नहीं, निंद मरत बिनु काल।।

शबरी - लम्बी दातून जो करे, जूठी पतरी खाय।
परातीरिया से नहे लगावै, सौ बैकुण्ठ जाय।।
मतंग - सुदुर दृष्टि अवलोकी, ठाकुर भोग लगाय।
माँ आशीष सु द्वार खुले, वहि बैकुण्ठ जाय।।
शबरी - सत जनो का एक दल, बावन दल का एक।
बावन बँट बारह भये, नाम कहो सुविवेक।।
मंतंग - जन्म तिथि सोलह दिसम्बर, उन्निस सौ सरसठ।
दिन वर्ष माह हंस के, सप्ताह रहा निज मठ।।
शबरी - आती जाती हूँ सदा, मन मौजी हूँ नाथ।
गुरु जी सही करोयता, सुख दु:ख में हूँ साथ।।
मतंग - सुर सुर चलती सुरा सुरा, दलकत मोर शरीर।
घास ताप धरती तरी, नासक तब का परी।।
शबरी - दान किये से बढ़े सदा, बिना दान घट जाय।
नियत जिसकी अच्छी, किस्मत भी दासी कहाय।।
मतंग - सुरसती भण्डार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यौ खरचा त्यो त्यौ बढ़े, बिन खर्चे घटि जात।।
शबरी - अपनो से अलग किया, चूतड़ मे सूई भोक।
मुहं से निकाल गांठा, दिया गले में भोक।।
मतंग - चमन से फूल तोड़ के, माला लिन्ह बनाय।
संध्या बंदन करि गुरु का, गले दिन्ह पहनाय।।
शबरी - बस द्वारे का किवड़ा, ना में पंछी पौन।
रहिबे कौ है अचरज, उड़े ता ेअचरज कौन।।
मतंग - परमात्मा अंश आत्मा, रहता सबके पास।
शुभ सत्कर्म साछी हंस, मिटा जन्म का प्यास।।
शबरी - एक बुला लाया मुझे, धरती पर मैं कौन।
भरा अपर ने दम लिया, अब भी तजिह हु मौन।।
मतंग - मात पिता ने जन्म दिया, ईश्वर अंश जीव।
जो आया सो जायेगा, सदा भजो शिव पीव।।
शबरी - उलटि पुलटि दाब के, आगे में दी फुलाय।
बत्तिस मिल के कुचल दिया, हंस रहे अठिलाय।।
मतंग - शुद्ध आहार बारी चोखा, पाचन शक्ति बढ़ाय।
जरा सा खाड़ घी मिले, हंस मस्त हो जाय।।

शबरी - कर्मकाण्डी जब चाहे, सुबह शाम बजाता।
किसी जीव की हड्डी 'हंस' रोज पूजा जाता।।

मतंग - संध्या बंदन पूजन मेघा, कोई शुभ अवसर आता।
भक्त भगवान से आज्ञा मांगे, नित 'हंस' शंख बजाता।।

शबरी - देश सेवा कौन कर सकता है?

मतंग - जिसका अंत:करण शुद्ध हो।

शबरी - संसार में ब्रह्मचारी कौन है?

मतंग - जो मन, वाणी, शरीर से, सम्पूर्ण संयम से सदा रहने वाला हो।

शबरी - मुर्खो का मुर्ख कौन है?

मतंग - जो मनुष्य शास्त्र पढ़ने, सत संगति रहने पर भी उसके अनुसार आचरण नहीं करता वह मुर्खो का मुर्ख है।

शबरी - मनुष्य जन्म किस लिये पाता है?

मतंग - देश सेवा और पुरुषार्थ के लिए।

शबरी - मनुष्य दुनिया को नहीं छोड़ता है?

मतंग - मनुष्य तो दुनिया को नहीं छोड़ता पर दुनिया बेकार करके उसे फेक देती है और जला देती है।

शबरी - संसार में मनुष्य के लिये क्या अमर हो जाता है?

मतंग - अपना अच्छा बुना कर्त्तव्य।

शबरी - उत्तम श्रेष्ठ मनुष्य कौन है?

मतंग - गोत वर्ण जाती रंग भेद आदि से रहित हो सदा सत्य धर्म का अनुसरण कर भगवान को भजता है पूजता है।

शबरी - उपासना का क्या अर्थ है?

मतंग - माता पिता गुरु की सेवा करना, भगवान् का सुबह-शाम स्मरण करना उपासना का असली अर्थ यही है।

शबरी - भूमि के उपर जीवो का उद्धार कैसे होता है?

मतंग - एक महात्मा पृथ्वी पर प्रकट होने से उनके प्रताप से अपार जीवो का उद्धार होता है।

शबरी - सब साधु महात्मा को कैसे समझना चाहिए?

मतंग - संत महात्मा को सब प्रकार से धर्म का ही अंग समझना चाहिए।

शबरी - सब रक्षाकार शिव कवच, कहहु कृपा कर नाथ।
हर अमंगल विघ्न सब, भय संकट दे साथ।।

मतंग - दें वर दायक शिव कवच, सुख शान्ति अनमोल।
चलो धारण करि शबरी, हर हर शिव शिव बोल।।
आनंद कंद चिदा नंद भय, विश्व मुरति का धार।
उमा सहित शिव ध्यान धरि, हिय शिव कवच संभार।।

ॐ नमो भगवते सदा शिवाय सकल तत्वात्मकाय सकल तत्व विहराव सकल लोकै कहर्त्ते सकल लौकैक गुरवे सकल लोकैकमर्त्ते सकल लोकैक साक्षिणो संकल निगम गुह्यय सकल वर प्रक्षय सकल दुरितार्त्ति भंजनाय सकल जगद भयंकशप सकल लोकौक शंकराच शशांक शेखराय शाश्वतनि जलासाय निर्गुणाय निरुपपाय निरूपाय निरामासाप निरामपपप निष्प्रपञ्चाय निष्कलंकाय निर्द्वन्द्वाय निस्संगाप निराधाय नित्य शुद्ध वृद्ध परिपूर्ण सच्चिदानन्दा द्वयाव परम शान्त प्रकाश तेजो रूपाय जय जय महारुद्र महारौद्र भद्रावतार दु:ख दाव दारण महा मैखं काल भैरव कल्पान्त भैरव कपाल मालाधर खट्वाग खंग चर्मपाशांकुश उमरुशूल चाप बाण गदा शक्ति भिन्दवाल तोमर मुसल मुद्गर पदि्श परशु परिघ भुशुण्डी शतघ्नी चक्राद्याबुध भीषणकर सहस्रमुख दष्ट्राकराल विकादाह हास विस्फारित सहस्र ब्रह्माण्ड मण्डल नागेन्द्र कुण्डल नागेन्द्र हार नागेन्द्र वलय नागेन्द्र चर्म घर मृत्युंजय त्रवम्बक त्रिपुरान्तक विरु पाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप वृषभवाहन विभुषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष मां जल जल महामृत्यु भवम.................. नाशय नाशय रोग भ्यमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभटां शमव शमटा चोर महां भारय भारय भ्ममशत्रुनुच्चात्योच्चात्य शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खंगेन छिन्छि छिन्छि खट्वांगेन विपोथहा विपोथ्य मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणै: संताडय संताडय रक्षांसि भीषण भीषण भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्ड बेताल मारीगण ब्रह्मराक्षसान संत्रासय संत्रासय ममाभवं कुरु कुरु वित्रस्त माया श्वासयाश्वासव नरकाभयान्मा मुद्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुतृड्भ्वां मामा प्यायघाप्यायय दु:खातुर मामानन्द वानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्रवम्बक सदा शिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

ये शिव कवच धारित नर, देवन पूजित होय।
शत्र दमन जयप्रद सुख, मिले 'हंस' यश सोय।।

प्रदीप्त विद्युत स्वर्ण समाना। सदा शिव सच्चिदानंद भगवान।।
उमा सहित शिव हृदय विराजो। बाहर भीतर शरण तेरी लाजो।।
सर्व देव महादेव पुकारी। हुँ असहाय करो रक्षा हमारी।।
संध्या वंदन नित करि शबरी। सुबह-शाम अरू दोपहरी।।
गुरु चरणों की दण्ड लगाई। नियमित कार्य आश्रम की बजाई।।
लखी सख गुरु की सेवा करती। कटु कठोर न कुछ भी लखती।।

प्रकट होय गुरु सेवा जूटी । आश्रम स्वच्छ रखती बूटी ।।
दीन दुखियो की सेवा करती । उपचार औषधि गुरु पहि रखती ।।

सबसे पहिले जागती, सोवत जान न कोय ।
फूल फल बुटि चुन लाती, अन्य न दुर्लभ होय।।55।।

ऋषियो कु मन इर्ष्या जागी । आया कौन कहाँ से त्यागी ।।
बूटि यहि से ले गयो मोरी । कई रोज से हो रहि चोरी ।।
चल सब मिलि के पता लगाये । महर्षि मतंग आश्रम धाये ।।
देखा बूटी फूल फल रतन । शबरी बैठी गुरु ध्यान मगन ।।
सब अनमोल रतन यहि लाई । हम सबको है मुरूख बनाई ।।
मतंग पर कु कलंक ढ़हाये । कलूषित शुद्रा शबरी बैठाये ।।
तत्वदर्शी ऋषियन समझाये । नहि मोरन तोर ईश बनाये ।।
प्राकृत प्रदत्त जगत जो गहता । सबका सु हक बराबर बनता ।।

आश्रम उपवन नही, और न तेरो लाय ।
प्राकृत प्रदत्त वन से, फल फुल औषधि खाय ।।56।।

जिस का स्वामी घटघट व्यापी । वह सेवक कैसे हो पापी ।।
फिर भी वन उपवन सब मोरा । शिष्या चोर नही आदेश बटोरा ।।
किया शरारत ऋषि अनारी । कुव्यंग कसि हनि देते गारी ।।
जो चाहसी आपनी भलाई । शबरी त्याग चौथ की नाई ।।
बहु भाँति बुझाय गुरु समझावा । बोध हृदय न ऋषियन आवा ।।
मोर शबरी भक्ता अनुगामिनि । विरागि विमल शुभ प्रद भामिनि ।।
आश्रम घाट बाट बिराजा । रहिहौ शबरी न होई अकाजा ।।
हरि जन जानी प्रीति सब रखिहहु । दूर दुर्जन से सवा कोस रहिहहु ।।

महर्षि मतंग बानि सुनि, कोपै रिसि समुदाय ।
गारि अलंकार नवाजहि, दुनौ भुजा उठाय ।।57।।

हुआ पापी कुजाति नवाजा । तू कलंक ऋषियन समाजा ।।
सामाजिक बहिष्कार करो । आश्रम अन्न जल त्याग सगरो ।।
नाना भांति अकलंक ठोका । क्रिया कष्ट अलापी अनेका ।।
सब क्रोधाग्नि ज्ञान नसाई । श्री हीन चले ऋषि समुदाई ।।
भागो मत बदलो संसार । वेद मंत्र की यही पुकार ।।
जिसने अपने को पहिचाना । सधा उसी का सही निशाना ।।

हरि के जन सबके प्रिय लागे । हरि भक्त वत्सला मोरे आगे ।।
सामाजिक बहिष्कार स्वीकारा । शरणागता शबरी निहारा ।।

सिमिरण कर लो राम नाम, तेरो मुक्ति बन जाई ।
नेक करो नैतिक चलो, मानवता धन पाई ।।

मेरा तेरा बड़ा छोटा भेद, ये मन से हटा दो ।
सब तुम्हारे तुम सभी के, फासले मन से हटा दो ।
जाति जहर की पुड़िया, इसका स्वाद न चखना इतराई ।
सिमिरण करके राम नाम का मुक्ति बना लो भाई ।

जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा अच्छा ही है ।
होगा जो अच्छा ही होगा, यह नियम सच्चा ही है ।
अग्रसोची सदा सुखी भजिले राम रतन धन पाई ।
सिमरण करलो राम नाम तेरो मुक्ति बन जाई ।

जो तुम्हारा आज है, कल वो ही था किसी और का ।
होगा परसो जाने किसका, यह नियम सरकार का ।
मग्न हो अपना समझना, यही मुर्खता है कहाई ।
सिमिरण करके राम नाम का मुक्ति बना लो भाई ।

लेके खाली हाथ आये, जो लिया यही से लिया ।
जो लिया नसीब से उसको, जो दिया यही कर दिया ।
होगा क्षण भर में कंगाल सभी, सब यहि छोड़ के जाई।
सिमिरण करके राम नाम का मुक्ति बना लो भाई ।

है किराये का मकान, ना तुम हो इसके ना तुम्हरा ।
पंच तत्वो का बना घर, देह कुछ दिन का सहारा ।
इस मकान में हो मुसाफिर, एक दिन तन छुट जाई ।
सिमिरण करके राम नाम का मुक्ति बना लो भाई ।

चरण शरण गही शबरी, उपदेशत हर्षाय ।
गुरु अचल भगति ज्ञान दे, शुभ आशीष बर्षाय ।।58।।

हरि ऊँ आवास जगत् सारा । जीवन उसी से व्याप्त हमारा ।।
ईश्वर नाम से लेके दुआ । जो बस्तु तुझे अब प्राप्त हुआ ।।
तू भोगता जा खुशी मन से । रखना न लोभ पराया धन से ।

परम्पराये है नही परधान । हो सदा विवेक का सम्मान ।।
जब तक रही चरित्र विकास । तब तक कर्म काण्ड उपहास ।।

अधिकारो का वह हकदार । जिसको है कर्तव्य से प्यार ।।
खोजै सभी जगह अच्छाई । ऐसी दृष्टि सदा सुखदाई ।।
जहाँ नही है सही विचार । वहाँ व्यर्थ धन का भण्डार ।।
निज सुख औरो तक पहुँचाओ । सदा पराई पीर घटाओ ।।
करो सदा ऐसे ही काम । जिनका हो सुन्दर परिणाम ।।
शिक्षक साधु विवेक जगाये । कुरीतियो की व्याधि मिटाये ।।

डरी सहमी अकेली शबरी
खड़ी बेबस इस दोजख में,
अंधेरी रात मुहं खोले,
अपने आगोस में लेने को आतुर
उस बेबश कोमलांगिनी को,
माथे पर पसीना,
किसी को बुलाने में असमर्थ
थरथराते शबरी के होठ,
असहाय होने का परिचय देते,
उसके पहनावे,
काले मृगचर्म,
कब अंधेरा उसपर हावी हो,
शबरी का
सर्वस्व स्वाहा कर देगा?
कब शबरी के मीठे बोल
कर्कश स्वर में,
तब्दील हो जायेंगे?
कब शबरी का चंचल चितवन,
धूल धूसरीत होकर
अवशेष मात्र रह जायेगा?
अंधेरी रात का साया,
कब शबरी को
पूरी तरह निगल
खुद ही की तरह
कुरूप बन जायेगा?
इस उधेड़बुन से जूझती
फिर थर थर कापती
डरी सहमी अकेली शबरी।

बचिगे नौर तनवा महर्षि मतंग संगवा, हो लाचार होवे देखत शबरी रहे।।
गुरु माता तंगनवा पत्नि विभा के सम्हनवा, हो लाचार हो के रोवत शबरी है।

छटे रिसिमयन झमेला टूटे हजारो चेला, मेला हो गइल उजाड़।।
बना के कुजात ठेला रहो गुरुजी अकेला, खेला हो गइल पहाड़।।
हो गये निल गगनवा सुन लागेला अंगनवा, हो लाचार होके देखत शबरी रहे।
ऋषि झूठा उफानवा हंस उठा तूफानवा, हो लाचार हो के रोवत शबरी रहे।।

गुरु माता दिहली आशीष शबरी जीओ लाख बरीस, आज से रहना मोरे साथ।
नित झुकाना शीश तैयार रखना हवीश, है गुरु परेश्वर तोरे नाथ।।
वैरागी पहिनी कंगनवा लागे न दाग दामनवा, हो लाचार हो के देखत शबरी रहे।
झर-झार झरे नीर नटानवा झुकती माता के चरनवा, हो लाचार होके रोवत शबरी रहे।।

तेरे चरणो में चढ़ते फूल उनसे सीखा वही वसूल, मैं अपना पुष्प चढ़ा पाऊँ।
कली चढ़े पुष्प चढ़े समय से पहले फिसल पड़े, वक्त पर कही फिसल न जाऊँ।।
माँ राखो अपनी शरनवा वही 'हंस' को दो वरदनवा, हो लाचार होके देखत।
गुरु माता सखा सम्हनवा करि आरती सांझ विहनवा, हो लाचार हो के रोवत0।।

अवसर वादी ऋषियन, भगे आश्रम छोड़।
नव रतन गुरु सहित बचे, रिस्ता राम से जोड़।।96।।

शिष्या शबरी गुरु माता तंगा। रिसि पत्नि विभा अरु गुरु मतंगा।।
रवि शुक सोनु विरला रंगा। रिसि इन्हे कहि कुजात मचावही दंगा।।
बुद्धिहीन रिसी बोलही बोली। हजारो घटि बचे नव की टोली।।
अजूवा उपहार लाया होली। लाजन गुरु जी मुख न खोली।।
गुरु माता गुरुवर को समझाई। दे सहारा साहस जोश बढ़ाई।।
शरणागता रक्षा उपकार कहाई। सो वाप चक्र से लिया बचाई।।
हिय हुलसित माता होली जगावही। आर्शीवाद झड़ी विभा माता लगावही।।
बार-बार शबरी शरण मनावही। चरण वंदना करि शिश झुका वही।।

देन हार कोई और है, भेजत जो दिन रैन।
लेग भरम हम पर करे, तासो निचे नैन।।

हरि ॐ आवास जगत सारा। जीवन उसी से व्याप्त हमारा।।
ईश्वर नाम से लेके दुआ। जो वस्तु तुझे प्राप्त हुआ।।
तू भोगता जा खुशी मन से। रखना न लोभ पराये धन से।।
छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित वह अद्यम शरीरा।।
पंच प्राकृत जड़ तत्व तल रहाई। माटी के देह अंत माटी मिल जाई।।
पानी का बुल्ला यह तन भाई। सारा जगत इक सपना कहाई।।
उठो उठो जागो चेतो महाना। यह उपकारी तन विरथा न गवाना।
मलन करहु भजन तन सेवा में लगाना। वहि पुरुषार्थी का अचल खजाना।।

द्वैताद्वैत भाषी गुरु, शबरी भरम मिटाय ।
भार भक्ति शक्ति सौपी, दी आश्रम टिकाय ।।59।।

रहे जीवित जाये शरीर । करो परवाह न इसकी वीर ।।
शबरी सिर पर हाथ फेरी । दिया सुरक्षा इष्ट घनेरी ।।
आश्रम वन उपवन कोई । कुदृष्टि विलोकत नाश होई ।।
सबके हीत में है अपना हीत । स्वार्थी की दुर्गति है निश्चित ।।
तोही कुदृष्टि विलोकै जोई । वह ताहि क्षण कोढ़ी लगड़ा होई ।।
आशीष दिन्ही अनेक उदारा । सद् चरित्र शुभ प्रद व्यवहारा ।।
दीन दुखियों की सेवा धाई । हरि ऊँ कीर्तन आश्रम गाई ।।
शबरी भेष अनेको होता । योगिन कभी दासी कभी वेत्ता ।।
भवानी शोहरत खुब कमाई । गुरु मतंग शिष्या कहाई ।।

तन बदन अति सुन्दर, मुख मण्डल आभा होय ।
ब्रह्मचर्य पुष्ट बदन पर, खिली चांदनी जोय ।।60।।

रूप गुण शील लावण्य छाजै । शबरी किशोरी अवस्था राजै ।।
मांसिक विडम्बना छुछुन्दर लोटी । कुछ ऋषियन की नियत खोटी ।।
कामी दुष्ट देखी ललचाये । झट शबरी का धक्का खाये ।।
'हंस' वहाँ न होता सत्य आभास । जहाँ हो काम-लोभ-यश आस ।।
पूर्णता कभी न आये पास । नारी में जिसको पत्नी-भाष ।।
डट के विरोध किया सब भारी । महर्षि मतंग को कुछ न ख्वारी ।।
कर्म काण्डीयन के अनाचारी । सह सह सहन बने सदाचारी ।।

रूप गुण शील बुद्धि नहि थोरी । अजपा जाप मगन किशोरी ।।
गेहूँ व गुलाब धरोहर रखती । फूल व कांटा सा सजग रहती ।।
तन मन धन करि गुरु को अर्पण । अहर्निश सेवा आत्म समर्पण ।।
जहाँ जाति वरण का नहिं विधाना। सुनो हूँ उस देश का वासी सुजाना।।
अंग मिलावन सपने हु न होई। सच शब्द मिलावन सीखा सोई।।

सुबहो शाम पुजन करी, गुरु चरणन धरि माथ ।
भगति ज्ञान देहु मोही, 'हंस' हि करो सनाथ ।।61।।

सिद्ध गुरु नित गहती अशीशा । अैहे सु कब राम जगदीसा ।।
अैहहि राम धरहु मन धीरा । हरिहहि जनम जनम के पीरा ।।
सुक्ति मुक्ति तोही बन जाई । रहहु अचल हरि पद के पाई ।।
धर्म क्षेत्र में पूज्य वही नर । त्यागे लोभ स्वार्थ आडम्बर ।।
जहाँ हृदय परमार्थ परायण । वही प्रकट नर में नारायण ।।
आतम अनुभव सुख सु प्रकाशा । तब भव भूल भेद भ्रम नासा ।।

करि अनेको शोध सिद्ध, कीर्ति रचि महान ।
यही विधि बिते वर्ष बहु, 'हंस' पावत सम्मान ।।62।।

रोज नयी नुख्सा सुलझाती । जड़ी बूटी कूट दवा बनाती ।।
असाध्य रोग से मुक्ति दिलाती । दीन दुःखी राहत सेवा चलाती ।।
गुरु महर्षि मतंग महिमा गाती । आश्रम गरिमा रोज बढ़ाती ।।
पंथ आवत लोगन्ह को भड़कावै । अन्य ऋषि सब विरोध मनावै ।।
करै विरोध पर लोग न माने । रहे आश्रम आवत लोग सयाने ।।
दुआ दवा ले खुशी मनावै । गुरु महर्षि मतंग चरणन रज पावै ।।
सफल श्री शबरी कार्य निहारा । प्रफुल्लित हो गुरु वचन उच्चारा ।।
सर्व सिद्ध महात्मा है तू भारी । धन्य धन्य हे शबरी कुमारी ।।

सफल तेरे काज सभी, रहो सफल सब ठांव ।
अैसही भगति करि चलो, मिले जगत् को छाँव ।।63।।

जीव जीव नही राखी भेवा । संजन दुर्जन पशुवन करि सेवा ।।
हरि ॐ कीर्तन पाठ पढ़ाती । करिहहु हरि सिमिरण सुमन गहाती ।।
भगति का शुभ प्रद असल तरिका । जन जन वितरण करहु शलिका ।।
कार्य सभी शुभ चिन्तक पावा । कोई करनी नहि जासो दुःख आवा ।।
आज तक मिला न कोई विद्वाना । सर्वसिद्ध महात्मा तुझे माना ।।

जो छुति वह सिद्ध हो जाता । जो कहती सच वही मैं पाता ।।
जो कुछ पायी अपनी करनी । अब कुछ ले लो मुझसे दुःख हरनी ।।
सुत वित्त धरा धाम कोई । जो कुछ माँगो देऊँ सोई ।।

जन्म मरण बंधन छुटे, छुटे जगत् की आश ।
जहाँ जाय लौटे नही, सोई भगति 'हंस' भाष ।।64।।

गुढ़ बचन सुनि मुनि हर्षाई । एवमस्त कहि भाषी लखाई ।।
गुप्त से गुप्त भेद बतावा । शबरी हृदय दृढ़ भगति टिकावा ।।
तोरी अंगना पधार राम जुड़ावे । जनम-जनम के पातक मिटावे ।।
तोरे सिर पर हाथ परसि भगवाना । दैहहि अचल पद निर्वाना ।।
ऐसे ही करत रहो प्रभु काजा । धिर धरि हिय न होई अकाजा ।।
करि विमल भगति जिती रघुराई । सम्मुख आवत राम गोसाई ।।
तुव नाम सुमिरी सिद्ध होंगे विरागी । धन्य धन्य शबरी बड़ भागी ।।
जग रहो सफल आशीश सुनावा । पुलकित हृदय सुमन बरसावा ।।

राम लखन अैहे यहाँ, सीता खोज निदान ।
सिद्ध काज हो राम का, गुप्त भेद पय दान ।।65।।

राम राम जपो श्रीराम अैहे । मन धरू संतोष श्री राम अैहे ।।
थाकल तोरी उमरिया कब अैहे । जागो गुरु जागो श्रीराम अैहे ।।
श्रीराम अैहे लखन लाल अैहे । माता सीता को खोजत श्रीराम अैहे ।।
राम राम जपो श्रीराम अैहे । मन धरो संतोष श्रीराम अैहे ।।
श्रीराम अैहे संग ऋषियन अैहे । उनकी समस्या श्री राम कहि है ।।
राम राम जपो श्रीराम अैहे । मन धरो संतोष श्रीराम अैहे ।।
श्रीराम अैहे शिव हरि ब्रह्मा अैहे । उनके दर्शन से मुक्ति मिल जैहै ।।
राम राम जपो श्रीराम अैहे । मन धरु संतोष श्रीराम अैहे ।।

आशीश गुरु का गहती, निशदिन सेवा धाय ।
परम पिता गुरु शरणमें, मगन रही हर्षाय ।।66।।

भक्ति शक्ति शबरी दियो, जगा दी आतम ज्ञान ।
थाल परोसा फल लियो, खड़ी गुरुवर ध्यान ।।67।

कर जोरि अरज गुरु से कीन्हा । क्या पहचान राम के चीन्हा ।।
गुरु दर्शन बहु आवत मति धीरा । प्रभु भी अवतरेउ मनुज शरिरा ।।
दुष्ट भी रचि माया भेष बनावा । कैसे जानू राम यहाँ आवा ।।
सो सब भेद मोही दो बतलाई । चरण शरण राखहु अपनाई ।।
सो सब सुनहु भक्तमति बाला । प्रभु राम है सबसे आला ।।
थाल परोसा फल उठाके । जो खायेगा हाथ लगाके ।।
उसे समझना है श्रीराम । जय श्रीराम जय जय श्रीराम ।।

सर्व सिद्ध हौ हंस तुव, रहि सजग पारायण ।
ना जाने किस भेष में, मिल जाय नारायण ।।68।।

दूसरा थाल न हाथ लगायेगा । नहि निज सत्यानाश करायेगा ।।
छल नहि होगा तेरे साथ । मंत्र सींचित जल तेरे हाथ ।।
छोड़ न जाना आश्रम कहीं । राम आते होगे आश यही ।।
पधारो प्रभु घर मोरे अंगना । करो साकार जो देखहु सपना ।।
चित्त न धरो मोरी अवगुण नाथा । पग वंदन करि झुकावती माथा ।।
थाल परोसा ले कीर्तन गावो । आओ श्रीराम भोग लगाओ ।।
अटल विश्वास राखु मति धीरा । आई राम हरही भव पीरा ।।
बार बार गुरु चरणन लागी । हरष मनावती शबरी बड़ भागी ।।

गुरु सानिध्य सुख पावत, वर्ष इक्यावन जाय ।
सफल कार्य करि शबरी, आश्रम रहि चलाय ।।69।।

सुबह शाम करि गुरुवर सेवा । भोग लगावती फूल फल मेवा ।।
प्रथम सो तेज नहि तन माही । घृत बिनु दीप जलत झिलमिलाही ।।
कफ पीत वात रोग घेरी । तन बदन सब थाकेउ मेरी ।।
गावत कीर्तन बोल न फूटही । नस नस मोरी बदन सब टुटही ।।
बहु भाँति रहा मन समुझाई । एहिजे ही प्रभु दर्शन हो जाई ।।
देखि कांपत बदन छुटा विश्वासा । अब मोहि न होहि दर्शन की आशा ।।
अब सुलभ दरस इहाँ न पावा । तप बल शबरी को समझावा ।।
होगा न दरस परस इहाँ मोही । आवत राम बहुत देर होई ।।
श्रीराम दर्शन मैं नही पावा । तू बड़ भागी राम दर्शन आवा ।।
पूर्ण हो चूका देह का करमा । करे प्रारब्ध अद्य निज धरमा ।।

हरि ऊँ आवास जग सब, जीवन जिससे प्राप्त।
भोगता जा खुशि मन से, बस्तु तुव जो प्राप्त ।।

करो मत चिन्ता भक्त मति शबरी । नश्वर शरिर की गति न सुधरी ।।
यह देह रहे या जाये भाई । इसे तुम छोड़ो नियति ठहराई ।।
जब देह का कार्य शेष हो जाये । तब जाता है तो क्यों छबड़ाये ।।

इसे पुनः प्रारब्ध कर्म से पाये । या अब वे चाहे जहाँ बहाये ॥
कोई आदर से मालाये पहनायेगा । कोई घृणा जता पैरों से ठुकरायेगा ॥
तुम सत-चित-शान्ति मत तजना । सदा आनंद निरत नित रहना ॥
प्रीति कहाँ-कहाँ शत्रु भय है । यश कहाँ-कहाँ अपयश है ॥
इस धारा में मत बहना । त्रिविध ताप से मुक्त रहना ॥
जब निन्दक और प्रशंसक हीता । जब निंदित और प्रशांसित प्रीता ॥
सबमें है एकात्म एकहि चिन्हित । तब कौन प्रशंसित कौन निन्दित ॥
यह एक्य ज्ञान हृदयांगम करिके । श्रीराम भरोसा 'हंस' जी धरि के ॥
हे सिद्ध सम्मता आनंदित रहना । उमापति शिव श्रीराम भजना ॥

मेरा अंत धरी आया, यह लो तत्व सु ज्ञान ।
गद्दी नसीन रहो शबरी, आश्रम रखना ध्यान ।।71।।

तत्व यह जग में सर्व विदित । कर्म के फल होते निश्चित ॥
पुण्य के मधुर पाप के तिक्त । नहीं है कोई इससे मुक्त ॥
मेरा तेरा बड़ा छोटा । ऐसा भेद न रखना खोटा ॥
सब तुम्हारे तुम सभी के । फासले मिटा दो दुश्मनीके ॥
किराये का है मकान गवारा । ना तुम इसके ना तुम्हारा ॥
पंच तत्वो का घर कचनारा । देह कुछ दिन का सहारा ॥
मुसाफिर हो इस मकान में । रहते निभोर क्षण भंगूर शान में ॥
रहा क्षणभर में मालो माला । एक क्षण में तन हुआ कंगाला ॥
अजन्मा हौ अमर आत्मा से । चलो स्नेह जोड़ी परमात्मा से ॥
गौरी गणेश संतन रखि साखी । अभिषेक लगन तिथि शोध राखी ॥
सुर नर मुनि सब नौति बुलाई । आश्रम घाट-बाट सजाई ॥
नियत समय करि सिद्ध सब काजा । सुमिरि उमाशिव गनपति महाराजा ॥

जगत आये संत जन, मुक्त करन को जीव ।
सब अज्ञान मिटाई हंस, करत जीव ते शीव ।।72।।

गुरु गणेश संतन स्वस्ति सुनाई । गुरु सिंहासन शबरी बैठाई ॥
पूज्य सिंहासन माथा टेका । बहु भांति करि शुभ प्रद अभिषेका ॥
वही व्यक्ति है सच्चा संत । जिसके स्वार्थ अहम् का अन्त ॥
बहुत सरल उपदेश सुनाना । किन्तु कठिन करके दिखलाना ॥
मिलता उसको ही प्रभु प्यार । जो करता है आत्म सुधार ॥
ईश्वर को सतकार्य पसंद । नही चापलूसी अरू छल छन्द ॥

ऊँची विद्या ऊँचे बोल । सदाचार बिनु माटी मोल ॥
ममता समता सुचिता लाये । इस जीवन को दिव्य बनाये ॥
पशु बलि झाड़ फूक जंजाल । इनसे बचे वही खुशहाल ॥
स्वस्ति वाचन गुरुवर कीन्हा । बहु भाँति आशीष सम्मान दीन्हा ॥

सब अपराध बिसारिहहु, सुयोग लगावहु तोही ।
'हंस' सु सेवक जानिके, दरस करावहु मोही ।।73।।

सुनि गुरु आशीष हिय हुलसाई । पग रज ले निज माथ लगाई ॥
गुरु सिंहासन दहिने राखी । बैठि निज सिंहासन गुरु सेवा चाखी ॥
करि गौरी गणेश शिव साखी । सेवारत रहती गुरु महिमा भाषी ॥
अहर्निश गुरु का ध्यान रखती । निन्द्रा तंन्द्रा सपने न लखती ॥
गुरु आदेश झट पालन करती । मान सम्मान गुरु चरण में धरती ॥
भूखे भोजन दे प्यासे को पानी । प्यार से कहते 'हंस' सेवा दानी ॥
दीन दुखियन दुःख करि निपाता । सेवा दानी शबरी माता ॥
महर्षि मतंग राखी पगरी । जय जय जय मैया श्री शबरी ॥

पाई प्रसिद्धि जग में, माता सम नहि कोय ।
मैया सुश्री शबरी का, जय जय कारा होय ।।74।।

हे त्रिकाल दर्शी महर्षि जय गुरु मतंग दास की ।
हे देवज्ञ सर्वज्ञ नाथ, रखना सत् शबरी दास की ॥
तेरे जप-तप में जो गिरते पसिना, उगते फूल अनमोल ।
नहीं सुखते नहीं मुरझाते नाथ, वह कोमल सुगंधित चोल ॥
ऋषि मुनि देवता शिश चढ़ाते, रहते सुगंधित सुवास की ॥
हे देवज्ञ सर्वज्ञ नाथ, रखना सत् शबरी दास की ॥
हे नाथो के नाथ दीनानाथ, मै शरण गहूँ तेरी ॥
मैं हूँ अनाथ करो सनाथ, सब दुखड़ा हरो मेरी ॥
हे नाथ अचल कर दो मेरी, भक्ति शक्ति अरदास की ।
हे देवज्ञ सर्वज्ञ नाथ, रखना सत् शबरी दास की ॥
पालन पोषण करि मात पिता, दियो प्रथम जो ज्ञान ।
माया बंध हरे तत्वज्ञान, वही दी गुरु नारद भगवान ॥
तेरे नाम की ज्योति जगाती रहती, विरागी पहिनि लिवास की ।
हे देवज्ञ सर्वज्ञ नाथ, रखना सत् शबरी दास की ॥

मेरी नैया अधजल बीच भँवर में, छोड़ न जाना नाथ ।
उपदेशत नेम अरु प्रेम तुम्ही प्रभु योग सिखावत रखते सनाथ ॥
धर्म बतावत ज्ञान लखावत 'हंस' शक्ति पावत सुदास की ॥
हे देवज्ञ सर्वज्ञ नाथ, रखना सत् शबरी दास की ॥

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलु ।
शबरी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा ।।75।।

सर्वगुण आगर महियषि, साध सेवा बनाय ।
सफल महंथ मां शबरी, सु दुआ सुमन बंटाय ।।76।।

मिलि प्रसिद्धि जगत् मे भारी । नित दर्शन आवत नर नारी ॥
दुःख सुख उनके हाथ बंटाती । लेती दुआ दुआ सुमन गहाती ॥
हरष मनाय कीर्तन गावै । अैहहि राम राम समझावै ॥
नर नारी जुमे भीड़ अपारा । महर्षि मतंग की जय जय कारा ॥
ता पीछे माँ शबरी जयकारा । गुंज रहा ब्रह्माण्ड सारा ॥
गुरुवर पग रज ले खुशी मनावै । दरस परस करि करि घर जावै ॥
सुबह जन्म संध्या अवसाना । जो बुझै सो होय महाना ॥
गुरु चरण माँ शबरी पखारी । शक्ति पावती चरणामृत धारी ॥

बार बार स्तुति करि, गुरु चरण गहि लीन्ह ।
प्रज्ज्वलित दिव्य ज्योति, 'हंस' माँ को दीन्ह ।।77।।

निष्काम सेवारत सर्वेश्वरी । मातृ कृपा गुण आगरेश्वरी ॥
शिष्य प्रतिपाल नेक शबरी । आनन्द मंगल तू देह धरी ॥
ब्रह्मचारिणी दयालु माता । अहिंसा व्रती ज्ञान के दाता ॥
विनय करत गुरु हुए ब्रह्मलीना । शबरी तड़पे ज्यूँ जल बिनु मीना ॥
धरि धीरजु समाधि दीन्हा । बना पहचान स्मारक चीन्हा ॥
गुरुवर सफल भण्डारा कीन्हा । सेवा से माता पद लीन्हा ॥
जय गुरु महर्षि मतंग स्वामी । जय जय माँ शबरी सतनामी ॥
जय जयकार हुआ चहुँ ओरा । जय राम श्रीराम पिटि ढिढ़ोरा ॥
द्वेश ग्रसित रिसियन नहि सुहावा । शूद्रा कहि कहि घृणा लावा ॥
जाकी रही भावना जैसी । शबरी मूरत तिन्ह देखी तैसी ॥
महर्षि मतंग को यहि बिगारी । भक्ता से घृणा करै ऋषि भारी ॥
सुपात्र नही कुपात्र महाना । बार बार करही अपमाना ॥

माटी पत्थर पूजते, दिल-दिमाग पथराय ।
मानवता उनमें कहाँ, जाति पाँति सुहाय ।।78।।

किया विरोध रिसियो ने, माँ को निच ठहराय ।
सुपात्र नहि कुपात्र है, सब विधि रोक लगाय ।।79।।

द्वेश घृणा की उगि कियारी । ऋषि कुचाल चले आगारी ॥
छल कपट भेद चिड़ि न जाने । ज्यू दाना लोभ फँसी पैमाने ॥
जहँ-जहँ गोद रोपी शिकारी । तहँ-तहँ चिड़िया फँसि अनारी ॥
नदी सरोवर माँ भक्त जाते । घेरी रिसि सब रहे सताते ॥
चाहहि ईज्जत दाग लगाई । नदी घाट बाट सब रोका धाई ॥
घर फोरनि चोरनी ताहि बनाई । कूप वापी सरोवर रोक लगाई ॥

मानवता भूली दानवता तूली, रिसि घेरी शबरी को खुब सतावही ॥
व्यूह रचि विशला रिसि मतवाला, अबर अबला को गारी सुनावही ॥
नारी-नारी विरोधी रिसि नारी क्रोधी, घर फोरनि चोरनि कही लुलुकारही ॥
धर्म लाज बचाई 'हंस' शक्ति दिखाई, आश्रम छिप गुरु को पुकारही ॥

मात तुही गुरु तात तुही, लित भ्रात तुही, धन धान्य भण्डारो।
ईश तुही जगदीश तुही, मम शीश तुही प्रभु राखन हारो।
धाव तुही 'हंस राव तुही, सत भाव तुही मम नैन के तारो।
सार तुही करतार तुही, घर बार तुही परिवार हमारो।।

अर्पण गुरु को समर्पण हरिको, जो कुछ था मोरे पास हे ॥
सब है तुम्हारी राखो लाज हमारी, जो क्या बचा मेरो खास हे ॥
होगी तोरी बदनामी सच कहती स्वामी, जनगन मन सब तेरो सांस हे ॥
मेरी लाज तुम्हारा 'हंस' काज सवारा, करो मेरी रक्षा गुरु तुम्हारि आश हे ॥

रखहु लाज धरम मेरी, है सब तुम्हारे हाथ ।
किया समर्पण सु सब कुछ, बचा अब क्या नाथ ॥

शबरी भगाओ उद्यम रचाई । रिसि समूह आतंक बढ़ाई ॥
नदी सरोवर रोक लग जाता । शबरी आगे कुचाल मिट जाता ॥
अहिंसाव्रती रही स्वाभीमानी । उर भय शोक ताप न आनी ॥
सद्गुण है सच्ची सम्पत्ति । दुर्गुण सबसे बड़ी विपत्ति ॥
करो नही ऐसा व्यवहार । जो न स्वयं को हो स्वीकार ॥
सो सब उलटा करि कृपाला । शबरी रक्षक है दीन दयाला ॥

जल भीतर बाहर कीट पतंगा । भयो रक्तवर्ण जल तरंगा ॥
सरिता सर जल वापी तड़ागा । नर्क बना रिसि भये अभागा ॥

आतंक देखी रिसियन का, करती रही विचार ।
सम्मुख आय नारद जी, सब हर लिन्हो विकार ।।81।।

झट शबरी पग रज लिन्हो । चरण पखार आरती किन्हो ॥
बहु विधि गुरु का करि सेवकाई । कुशल क्षेम बुझी हर्षाई ॥
देवर्षि नारद वीणा बजावे । लखि रूख मधुरी स्वर में गावे ॥
धन्य-धन्य हे पूज्य भवानी । तुम्हारी महिमा गावै शिव विज्ञानी ॥
तुम्हरे नाम से होहि कल्याना । सुर नर मुनि धरही नित ध्याना ॥
जैसी करनी हो वैसा फल । जो आज नही तो निश्चय कल ॥
ईश्वर के घर लगती देर । किन्तु नहीं चलता अँधेर ॥
जो उपहास विरोध पचाते । वे ही नया कार्य कर पाते ॥

उपदेशत शबरी को, सु नारद महाराज ।
चरण धुलि ले धन्य हुई, 'हंस' संतन सु राज ।।82।।

ऋषि तपस्या सरभंग समस्या, देखी नारद जी बिहंसे ।
जैसा करनी वैसा भरनी, ठुमकि वीणा तार कसे ।
जन सुखदाई भजी रघुराई, महिमा है जानत शबरी रसे ।
रिसियन आपा उल्टा जापा, सर जल रक्त कीट बसे ।

सरिता सर पानी रक्तकीट भवानी, स्वच्छ जल बिनु रिसि तरसे ।
नदी वन बागा वापी तड़ागा, नहि फूल फल जल बिनु आग बरसे ।
योग युक्ति बनाई करि कोटिन उपाई, हारी थकी भागे कुटि घर से ।
शबरी फांस रही, 'हंस' आस नहीं, आश्रम कुटि छोड़ि बचो जीवन से ।

जाति वंश के नाम पर, बड़ा छोटा न कोय ।
जलज जोंक जल एक में, दोनों में गुण दोय ।।83।।

जनमे जलज जोक इक स्याना। एक वास गुण भिन्न महाना।।
मकरंद बिखरे पंकज मुस्काई। मोहित सुर नर मुनि शीश चढ़ाई।।
परमारथ हीत ग्रीवा कटाई। संतन सेवा सुख जोश बढ़ाई।।
स्थित जल जोक चले टेढ़ी चाल। लेती खुन चूस उखाड़ी खाल।।
कीट परजीवी जाति एका। देती कष्ट कुरोग अनेका।।
परजीवी बनों न मानव महाना। खुन ग्रसित भोजन मत पाना।।
मानव धर्म उपकार कहावा। कवि को विद श्रुति संतन गावा।।
करतु भलाई भला तेरी होगी। पुष्प कमल गुण देखो योगी।।

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
बिना जीभ की हाय से, लौह भस्म हो जाय।।

सत्य अहिंसा ब्रती विरागी। अबर अबला संग कुचाल दागी।।
नहि बोले पशु क्या घास न खाई। ऐसा क्यों सोच समझ लिया भाई।।
मुयेंहि मारैं नही कछु मनुषाई। देखी जबर सबु चलहु लुकाई।।
गोधन छिनि रिसियन सतायो। यज्ञ विध्वंसी भोग सबु खायो।।
रावण बाली खर दुषण संगा। उन दुष्टन संग लीनी न कबहु पंगा।।
सो रीस काढी अबला सताये हूँ। नही कल्याण विधि हरि हर जु आवे हूँ।।
निज मन झांकि निज चरीत देख हूँ। जप तप ध्यान छोड़ी राग अलापे हूं।।
करि शबरी भजन हरि बिसराय हूं। त्यागी धरम लोभ अपनाये हूं।।
निःबल शबरी है निर्मल आला। रीझेंगे ताहि पर दीन दयाला।।
वरद हस्त जेहि शीश बिराजै। सपने हु ताहि न कोऊ भाजै।।

कंठी से कुठित हृदय, अचला अचल न ज्ञान ।
लाल पीली स्वेत तिलक, तब भी रहा अज्ञान ।।84।।

रिसियन घेरी वीणा टेरी, नारायण नारायण नारद पुकारी ।
संतन सुखधामा अैहे वनरामा, हरि है सबका संकट भारी ।
मन धरहुधीरा जनि होहि अधिरा, यहि अैहे हरि नही बनो आनारी ।
तनु घनश्यामा हंस के रामा, शबरी अरू सर जल मुक्ति सुधारी ।

सब मिलि ध्यावहू अरज लगावहूँ, दुःख भंजन प्रभु है जन सुखदायी ।
संतन सुख दैहो सब दुःख हरिहौ, कृपालु है प्रनतवाल रघुरायी ।
अवतरेऊँ कृपाला दीन दयाला, जिनकी महिमा शेष महेश दिनेश गाई ।
मै सुनि काना 'हंस' हीत बखाना, यदि सुख चाहो भजहू शरन मनाई ।

हरि ऊँ नारायण गावत, वीणा की झंकार ।
बजा बंदगी चले मुनि, रिसिवन को ललकार ।।85।।

प्रबोधि शोधि संत सुजाना । नारद बचन सत्य सब माना ॥
अब जनि करो अन्य अनुमाना । कपट छाड़ी भजहु भगवाना ॥
राम श्रीराम कहते रहियो । जाहि विधि राखे ताहि विधि रहियो ॥
पंचवटी चित्रकुट रौशनाई । जब अैहे राम काम बन जाई ॥
लीला रचिहहि एक ते एका । संतन हरिहहि कष्ट अनेका ॥
करनी शबरी का सब दुःख पावै । ताहि मिटावन राम यहाँ आवै ॥
भेद भरम संसय सब नाशा । अचल करो प्रभु पर विश्वासा ॥
सरिता सर जल स्वच्छ होई । उपजहि फुल फल वन उपवन सोई ॥

राम नाम रटते रहो, जब तक घट में प्राण।

कभी तो दीन दयाल के, भनक पड़ेगी कान॥

गुरुकुल कक्षा श्रेणी आवरण। शूद्र वैश्य क्षत्रिय ब्राह्मण॥
प्रवेसिका प्रवेशिकोत्तर भाई। स्नातक स्नातकोत्तर कहाई॥
कालखण्ड परिणाम उलटा। कक्षा श्रेणी वर्णवादी पलटा॥
बढ़े जातिवादि मांसिक धारा। शूद्र श्रेणी रख अबला दुत्कारा॥
दास प्रथा रुढ़िवादि बनाई। देव दासी परम्परा खुब चलाई॥
वर्णवादी व्यवस्था चलवावा। सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण कहलावा॥
व्यवस्थापक बनि राह दिखावा। रक्षा भार क्षत्रिय ही टिकावा।
वैश्य भरन शूद्र से सेवा। यहि कारण खोजै शबरी से मेवा॥
अबला अभिषेक अवश्यंभावी। पुरोहिताई पूर्ण अधिकार हावी॥
राम चरन पकज उर धरहु। चाखी चारीफल सुख सब करहुं॥

यही आस चिपकी रहो, हिय सुमिरी श्रीराम ।
देहौं जीवन सुखमयी, या पठवो सुर धाम ।।86।।

जन्म जाति भेद धरही, ऋषि सकल समुदाय ।
उड़गन बीच शबरी हि, विधुसम ज्योति छिटकाय ।।87।।

माँ गद्दीनसीन भई जबसे । ऋषियन पारा चढ़ा तब से ॥
गाली द्वेश के फेटा बांधे । उपहास धरि सोटा कांधे ॥
सरभंग बसि हठ योग साधे । आनन फानन बहु आराधे ॥
तंत्र मंत्र यंत्र अपनावै । सो दम्भ ग्रसित शबरी पर चलावे ॥
कुछ हठ पर चढ़ि आयो रिसी । कुछ भागे कुछ पिसत बतिसी ॥
कुछ रिसि शबरी शरण मनावे । करि छल कपट अन्न जल पावै ॥
श्रीशबरी संघ सुख अनूपा । गहहि आशीष नित यति रंक भूपा ॥
गाली उपहास द्वेश घृणा कीच । दो कमल खिला पंक पयोधि बीच ॥

रिसियन आतंक सहमी, उजड़ा घर संसार ।
माँ शबरी शरण दोऊँ, गिरी भूजा पसार ।।89।।

सुधिया बुधिया दोनो किशोरी । माता से अरज किन्ही कर जोरी ॥
शरणागत हूँ हमें उठाओ । संत शिरोमणि दया दिखाओ ॥
दुष्ट पापी से हमे बचाओ । शरण रहु भगवत भक्ति दिलाओ ॥
दैहिक दैविक भौतिक पीड़ा । क्षण में हरे देहु मोही नीड़ा ॥
मैं अति दीन शरण में लेलो । कृपा करो अपना पट खोलो ॥
राम सदा तेरे उर बसही । कृपा शम्भू की तुम पर रहही ॥
मेरे जीवन के तुम रखवारे । जैसे राखो हाथ तुम्हारे ॥

काम क्रोध छुटत नही माया । तन मन थाके दौड़े आया ॥

काम क्रोध की पीड़ा में, भटक रहे दिन रात ।
अहंकार व्यभिचार से, हमें दिलाओ निजात ।।90।।

अति विलखती दोऊँ नारी । आँसुवन माता चरणन पखारी ॥
पूंजती चरणन माथ रखि दिन्हा । उठा दोऊँ हृदय गहि लीन्हा ॥
कही समझाय बहु भाँति माता । हिव बोध कराय जोड़ी नाता ॥
दे चिबुक चिवर शोक हर लीन्हा । गुरु ही सुमिरी माँ दीक्षा दीन्हा ॥
जो कहलाते है छोटे लोग । है बहुत बड़ा उनका सहयोग ॥
खोजे पर गुण अपने दोष । रखे सीमित साधन में संतोष ॥
अब तक का इतिहास बताता । मानव है निज भाग्य विधाता ॥
धरि धीरज करुँ भजन भवानी । अैहहि राम यहि सुख मानी ॥

दीन हीनन के रक्षक, करूणापति घनश्याम ।
करो सफाई आश्रम, आवत है श्री राम ।।91।।

माता शबरी का करि सेवकाई । तन मन सेवा रहती धाई ॥
दुनो सहायक शिष्या गूनी । लगावती सेज जगावती धूनी ॥
आश्रम घाट स्वच्छ बनाई । मधुर मिलन माँ मंच हि आई ॥
निःस्वारथ सेवा कदम बढ़ाई । हीत अनहीत पहचान न लाई ॥
तेरे द्वार जो कोई आता । सुमंगली श्रद्धा सुमन चढ़ाता ॥
दुआ दवा दुःख करती निपाता । कोल किरात भील सुख पाता ॥
बांटती स्नेह शिक्त फूल माला । खोलती बंद अकल के ताला ॥
सर्व सिद्ध है शबरी माता । ऋद्धि सिद्धि सुमंगली दाता ॥

सबके हृदय राजती, माता शबरी महान ।
कोल किरत भीलन के, रही पूज्य परधान ।।92।।

राम राम जपो श्रीराम अैहै । मनधरूँ संतोष श्री राम अैहै ॥
गौरी गणेश अैहै उमापति अैहै । गली साफ सुथरा करो श्रीराम अैहै ॥
स्वरसती वीणा बजैहै ब्रह्मा अैहै । गलियन फूल बिछाओ श्रीराम अैहै ॥
जागो गुरु जागो श्रीराम अैहै । मन धरूँ संतोष श्री राम अैहै ॥
भण्डार लक्ष्मी चलैहै हरि भोग लगैहै । मीठा फल लाओ श्रीराम अैहै ॥
सातो शीतला अैहै मुण्डेश्वरी अैहै । आश्रम सजाओ श्रीराम अैहै ॥
रिसि संतऊँ गैहै लखन चँवर डुलैहै । बेर फल लाओ श्रीराम अैहै ॥
जागो गुरु जागो श्रीराम अैहै । मन धरूँ संतोष श्रीराम अैहै ॥

सुरति स्नेह सजाइ के, करो गुरुदेव ध्यान ।

अंततोगत्वा अैहे राम, करिहै हंस कल्याण ।।93।।

लेके खाली हाथ आये, संगे कुछ नही लाई थी ।
उपलब्ध बस्तु लिया यही से, वह भी पूर्वज की कमाई थी ।
जो लिया नसीब से उसको, अंत यही छोड़ जाना है ।
जग का है दस्तुर यही सच, हंस हाथ नहीं कुछ आना है ।

दर पे जो आये दुआ देती, गुरुवर ध्यान लगाय के ।
वैदिक रीति शबरी माता, साजती सब्र सजाय के ।
संत सुयोग लगा दीहली, ध्वजा फहराई राम नाम के ।
दीन दुखियन उबार कइली, उजागर गुरु सतनाम के ।

कोल किरात भील सनमानी । आश्रम रहि कीर्तन ठानी ।।
थाल ब्रह्म शक्ति रोपा । राम फल खाओ कहती गोपा ।।
करूँ समर्पण श्री भगवान को । तन छुए न मन अभिमान को ।।
जब भी करो करो घनश्याम को । अर्पण करो करो श्री राम को ।।
श्रद्धा भक्ति अनुराग लाओ । मुक्ति परमानंद पाओ ।।
आनंद ही आनंद होगा । आयेगे सुर मुनि गधर्व लोगा ।।
खुशिया मनाने सब आयेंगे । हम सबको गले लगायेंगे ।।
'हंस' सुमनहार पहनायेंगे । कन्द मूल फल भोग लगायेंगे ।।

वेहि होंगे सभी अतिथि, पखारू चरण हर्षाय ।
होगा पवित्र आश्रम, और सकल समुदाय ।।94।।

मैया श्री शबरी राखो लाज हमारी ।।....राखो.....2
मैं सेवक तुम अन्तर्यामी, सबके उर निवसो ।।
विरागी संत शिरोमणि मुझ पर उदार हृदय विहँसो ।।
हे दुःख हरणा रहु शरण तुम्हारी, मैया श्री शबरी.....।।
संकट में जब भक्त पुकारे, क्षण में कष्ट हरी ।।
राम सहाय शरण सबु आये, ऋषिजन अभय करी ।।
हे भक्त वत्सला मतंग दुलारी, मैया श्री शबरी....।।
मै दुखिया तेरी दर पर ठाढ़ी, कबसे द्वार पड़ी ।।
पट खोलो चरणो में ले लो, हु तेरे द्वार खड़ी ।।
हे ममतामयी तुही बाप महतारी, मैया श्री शबरी.....।।
सेवक सन जनि पर्दा राखो, बिपदा हरो सब मेरी ।।
दास 'हंस' को सम्मुख राखो, शरण गहुं मैं तेरी ।।
हे वात्सल्यमयी हे प्रेम पुजारी, मैया श्री शबरी....।।

राम रमैया गाये जा, राम से लगन लगाये जा।
राम ही तारे राम उबारे, राम नाम दोहराये जा।।टेक।।
सुबह यहां तो शाम है-२
राम बिना आराम कहा है-२
राम रमैया गाये जा, जीवन के सुख पाये जा-२
राम ही तारे राम उवारे.................
भटकाये जब भूल भूलइया-२
बीच भवर जब अटके नैया-२
राम रमैया गाये जा, हर उलझन सुलझाये जा-२
राम ही तारे राम उबोर.............
राम नाम बिनु जागा सोया-२
अंधियारे में जीवन खोया-२
राम ही तारे राम उबारे...............
राम नाम बिनु जागा सोया-२
अंधियारे में जीवन खोया-२
राम रमैया गाये जा, मन का दीप जलाये जा-२
राम ही तारे राम उबारे......................

जय हर हर महादेव पाहि माम। पार्वती वल्लभ शिव सुखधााम।।
जय रघुनंदन जय सिया राम। जानकी वल्लभ सीता-राम।।
जय यदुनंदन जय घनश्याम। रुक्मणी वल्लभ राधेश्याम।।
शिव मारुत केशरी पूरण काम। अंजनी वल्लभ जय रक्ष माम।।

।।संत जी.आर. हंस कृत 'माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण : द्वितीय सर्गं : श्रीश्री शबरी वैरागी दर्शन समाप्तः।।

❖

अथ श्रीराम सखा हनुमान जी

श्री जल्लामहावीर जी, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोही, हरहु क्लेश विकार।।
तृतीय सर्ग शबरी मर्यादा, रखि लीन्हौं करतार।
श्रीराम सखा हनुमान, हंस हृदयधार।।
बिहार राज्य धार्मिक, न्यास पर्षद सुपाल।
जल्ला मन्दिर संरक्षक, धन्य किशोर कुणाल।।
न्यास पर्षद प्रतिनिधि, हंस घनश्याम दास।
जल्ला महावीर मन्दिर, महंथार्चक खास।।
आशुतोष गुरु सदा शिव, ॐकार ग्यारह रूप।
लीला अपरम्पार हंस, सु जगत नियन्ता भूप।।
पूजत दशो रुद्र को, रावण सिद्ध हो जाय।
अपूजित ग्यारहवे रुद्र, हनु रूप प्रकटाय।।
राम सखा हनुमान की, कथा कहुं अनमोल।
त्रुटि क्षमा करि हंस की, बम-बम हर-हर बोल।।

केशरी केशर वन विराजा। धीर वीर अति सुन्दर राजा।
प्रजा सुखी रहे काज सवारे। भूत भावन शिव भक्त दुलारे।।
आरवेट करन गयो सुजाना। प्रभु इच्छा भाभी बलवाना।
देवकन्या अंजनी वहाँ आयी। शिव शक्ति का ध्यान लगायी।।
जय ग्यारह रुद्र विधाता। जय ग्यारह ॐ जोड़ऊँ नाता।
जय गणेश जय देवन्ह देव। जय शिव शंकर जय महादेवा।।
जय सती उमा पार्वती महतारी। शरण रहु राखो लाज हमारी।
जय शिव शक्ति मंगलदाता। जनम करम के हो पितु माता।

तुही मार्ग दर्शक गुरु, तातु मातु परिवार।
हंस दास गहता चरण, तातु मातु परिवार।।

कठोर तपस्या रत रही कुमारी। चहुं दिसी तेज प्रभा उजियारी।।
शिव चरणन तप तेज लागा। हिला सिंहासन शम्भू जागा।।
उमा भवानी संग में धायो। वरद हंस्त अंजना पर छायो।
वरद हस्त कण्ठमाल पहनायी। दिया आशीष हृदय लगायी।।
बैठी रही योग अपनायी। देखा अजूबा युवती तरुणायी।।
केशरी मोहित भवो अपारा। पवन चरु कर लिये पसारा।
सप्तरिसि शिव रेतस गहाही। सती रूप अपार हिव रति नाही।।
देखि हेतु रिस देन चली सापा। तब सप्तरिसि समझाया अलापा।

इच्छित स्वरूप गामिनी, तुम पाई वरदान।
हंस कोख अवतरेॐ, अंश रुद्र भगवान।।

गर्भबास करे भगवाना। ग्यारहवे रुद्र रूप हनुमाना।।
मारुतसम बली ह्वै है सुत तोरा। जा घर निज तजि बचन कठोरा।।
सप्त रिसि करि गयो सचेता। आनन्द मंगल अंजली चेता।।
प्रेम बंधन बंधे अंजना केशरी। बिचरत रूप धरि नर कभी हरी।।
जबसे गर्भ महि प्रभु आवों। सुर नर मुनि हिय हरष बढ़ायो।।
धन्य-धन्य ऋतुएं गदराई। शुभ नक्षत्र घरी अवतार पाई।।
एक मास नोमास सुरंगी। दसवा दस प्रकट वजरंगी।
बहु सेवा वतन केशरी करही। मधुमास पुर्णिमा मंगल अवतरही।।

शंकर सुवन केशरी सुत, रु पवन पूंज भण्डार।
माँ अंजनी कोख हंस, हनुमतलिन्ह अवतार।।

माता पिता आनन्द मनावै। नम से सुरन्ह फूल वरसावै।।
सब सुर नर मुनि स्तुति गावै। भूत भावन शिव डमरु बजावै।।
महर्षि मतंग मंत्र सम्पुट सुनावै। सहयोगि रिसिया वेद विधि पुजवावै।।
स्वस्ति वाचन आशीष गहावै। कुल दीपक केशरीनन्दन पावै।।
त्रिविध समीर आनन्द बढ़ायो। प्रकट रूप धरि तह आयो।।
हिय हुलसित खुब देही अशीषा। युग-युग जियहु लाख बरिसा।।
जन्मोत्सव शुभ आनन्द उछाहूं। हरस मगन रहे केशरी नाहूं।।
महर्षि मतंग बड़े भाव भरे। शिशु सुन्दर सलोना रूप धरे।।

आश्रम अन्तेवासियो, महर्षि मतंग साथ।
हंस जयकारा दे चले, शिशुहि नवाई माथ।।

सुर नर मुनि सब हरष मनावै। मंगल बधाई नृप केशरी पावै।

अघटित घटित घटना ऐसा। पूर्व घटित सादृश जैसा।।
अपने एक रूप धरेऊँ। अँग्यारह रुद्र महाकाल।
ग्यारहवें अंश प्रकटे भगवाना। संकट मोचन वीर हनुमान।।
दोऊँ रूप सदा शिव सुहाये। मंगल करन अमंगल ढहाये।।
गंगाधर आशुतोष महादेवा। सुमन बरसावही हर्षित देवा।
महाकाल महा रुद्र को माना। निज का पुत्र ताही को जाना।।
कभी हलरावै कभी दुबरावै। कभी गोदी कभी मुख चूगि धावै।।

मंगलमय हिव हुलसते, खेलत अंजलि लाल।
जमा लगन शुभयोग तिथि, सुनाय करण तत्काल।।

महर्षि मतंग निज आश्रम विराजे। उपासना विधि सवपूर्ण करि साजै।।
परम शिष्य श्री सुव्रत नामा। आजपा जाप जपै सतनामा।
चरण वन्दना करि विनय सुनावा। बानर युथपति केशरी आवा।।
गुरु आदेश संकेत बुझावही। आदर सहित ताही ले आवही।।
सुव्रत दौड़ी गुरुनाई माथा। आश्रय अन्दर ले गयो साथा।।
उदार भाव हरषे गुरु राई। कपि श्रेष्ठ केशरी पास बुलाई।।
दण्ड प्रणम साष्टांग कीन्हा। गुरु चरणन गहि केशरी लीन्हा।।
महर्षि मतंग छाती लगावा। कर फेरी सिर आशीष दुलरावा।।
केशरी सबको शीष नवावही। समस्त ऋषिगण आर्शीवचन सुनावही।।
तपोधन स्नेह से गदगद केशरी। तैयारी नामकरण गुरु चरवन धरी।।

करबद्ध भक्ति भाव से, किया विनती अनमोल।
नामकरण सुमहोत्सव, द्वार चलो शिव बोल।।

सादर चलो ऋषि समुदाय। सबको नेवता दीन्ही पठाय।।
भक्ति-भाव विनवत गुरु तोही। करो पवित्र परिवार मोही।।
महर्षि मतंग मन अनुरागा। सराहन लागे केशरी भागा।।
ॐ ग्यारह तेरे घर आयो। तू बड़ भागी योगी कहायो।।
तेरे भवन हम सभी चलबो। शिशु दर्शन हम भाग सवरबो।।
तपोधन महर्षि कहा समुझाई। चलो केशरी भवन रिसि समुदायी।।
ॐ ग्यारह शिव मण्डप महाना। नामकरण यज्ञ अनुष्ठाना।
चल सफल कार्य सम्पन्न करावहूं। अमर लोक स्थान बनावहूं।।

रिसियों में श्रेष्ठ रहे, महर्षि मतंग महान।
सबको साथ ले पहुँचे, वीर केशरी स्थान।।

विचित्र शिव मण्डप राजती रम्भा। कंचन मणिमय के दली खम्भा।।
यज्ञमण्डप परिसर विशाल। देखन आये अंगणित महपाल।।
केशरी भवन भव्यता भारी। अनोखे प्रतिमान दीव्यता सारी।।
अनोखे ढ़ंग से भवन सजाया। भव्यता में दीव्यता रहा समाया।।
हमेशा भव्य भवन मझारी। जहं माता अंजनी आसन सवारी।।
सम्पूर्ण सज्जा की एक निशानी। प्राकृतिक नूर रही दीवानी।।
शिष्य मण्डली संग मतंग पधारे। मुख्य वेदी पास आसन धारे।।
निज-निज आसन बैठे आई। यथा उचित सब आसन पाई।।

नामकरण समहारोह सु, सम्मिलित हुए वीर।
रावण बाली जायवन्त, बाणासुर रणधीर।।

पुत्र वीर से नानी आये। अनुज सुग्रीव बाली संग धाये।
विभिन्न जाति प्रमुख सब आये। यज्ञ मण्डप की शोभा बढ़ाये।।
देव दनुज किन्नर हर्षाये। विद्वतजन रिसिया के मंत्र गाये।
समारोह यज्ञ मण्डप महाना। परिसर बैठे रिसि मस्ताना।।
मुख्य वेदी महर्षि मतंग सवारे। ऋषिगण शिष्य बैठन वारे।
तब अंजनी को बोली पठाई। सुपुत्र साथ देवी अंजनी आई।।
गोदी शिशु आभा निखरता। सूर्य किरणे सम्पूट रहा बिखरता।
महर्षि मतंग बड़े भाव भरे। शिशु को देखा ताव भरे।।
यज्ञ मण्डप आसन दम्पति पाता। मंत्रोचार आरम्भ करावा।
उदार महर्षि मतंग हिय बिशाला। आचार्य दयित्व स्वयं सम्भाला।।

महर्षि दृश्य देखि सब, आश्चर्य चकित लोग।
कहाँ गृहस्थ वीतरागी कहाँ, योग भोग संयोग।।

संसारिक कर्तव्य पुरावही कैसे। वीतरागी महर्षि मतंग जैसे।।
अचरज करे एक ते एका। अंजना केशरी सौभाग्य टेका।
इन्द्र अरु बाली प्रस्ताव अनेका। सो आग्रह ठुकराई विवेका।।
समारोह नाम करण सुहाये। बनि के आचार्य सब विधि गाये।।
महान सम्राट के पास न जाते। अनुवय विनय क्षण में ठुकराते।।
सो अंजना केशरी प्रेम बढ़ा वही। वही अचरज की बात कढ़ा वही।।
परम सौभाग्य सु अवसर मेरे। हिय उदधि हिलोरे लेहि घनेरे।।

किया दर्शन रुद्र ग्यारह रूपा। अत:करण ॐ स्थित स्वरूपा।

सुदृढ़ रहस्य मतंग के, जानि सकै नहि कोय।
शुभ घरि लग्न आ पहुंचा, नामकरण तिथि सोय।।

महर्षि मतंग शिशु गोद उठाया। अंजनी लाल मन्द-मन्द मुस्काया।।
निर नयन कोर छलका आई। ग्यारहवे ऊँकार दर्शन पाई।।
चेतन रहित टक-टकी लगाई। सुधि-बुधि तन-मन रहा भुलाई।।
दीव्य प्रकाश हिय हरष अपारा। प्रतिपल दिखै ब्रह्माण्ड सारा।।
प्रेम बिबस मुख बचनन आवा। अनोखे शिशु चरण न शिश नवावा।।
तन मन धन सब तुम पर वारो। हे महाकाल महादेव सम्भारो।।
वीर केशरी मान बढ़ाओ। अंजनी लाल आप कहायो।।
महावीर रूप धारि हरतु क्लेशा। तुही ब्रह्म-विष्णु और महेश।।

रोम-रोम संचित रहा, सु राम नाम भण्डार।
आती जाती लय सदा, श्वास-श्वास संचार।।

अंजनी लाल मन्द-मन्द मुस्काई। तपोधन ऋषि चेतना लौटाई।।
बम-बम हर-हर बम-बम बोल। हरि के प्रेमी हर-हर बोल।।

श्रीश्री शबरी मर्यादा दर्शन

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकल गुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपति प्रिय भक्तं वातजातं नमामी ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥
श्री जल्ला महावीर जी, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोही, हरहु क्लेश विकार।।

तृतीय सर्ग शबरी मर्यादा, सुमिरौ पवन कुमार ।
माँ अंजनी कोख 'हंस' हनुमत् लिन्ह अवतार ।।
पूजत दसो रूद्र को, रावण सिद्ध हो जाय ।
अपूजित ग्यारहवे रूद्र, हनुरुप प्रकटाय ।।
बालावस्था हनुमान जी, करि बाल भोग की चाह ।
उदित रवि को फल समझि, चलहि प्राकृत थाह ।।
विधिविधान विपरित 'हंस', बढ़ता कदम थर्राय ।
वज्र मारा इन्द्र तब, बालक गिरा भर्राय ।।
इच्छित स्वरुप वर बल, मुक्त काल के दण्ड ।
वाल्यावस्था नटखट कपि, रिसि समूह उडण्ड ।।105।।
भूल जा निज बल हे हनुमाना । कोई याद करावत हो तब ज्ञाना ॥
भिन्न-भिन्न साप गहहि कपीसा । निडर चंचलता रुष्ट मुनिसा ॥
मतंग साप बस बल भूलाई । भूत भावन शिव लीला रचाई ॥
नटमर्कट का खेल औटाई । हनुमान अवध सौगात चढ़ाई ॥
राम रिझाय सेवा को धावै । तह राम सखा हनुमान कहावै ॥
विश्वामित्र विफल कई जागा । राम लखन मख रक्षा मागा ॥
एकान्त राम हनुमान बुझावै । पुनः दर्शन मम ऋष्यमूक पावै ॥
शबरी सुजश सुनि हिय हुलसाना । प्रभु आदेश बजा चले हनुमाना ॥

ऋष्यमुक मुक्त मतंग साप, सुग्रीव बसा सुजान ।
आवत होइहैं रामजी, बाट जोहहि हनुमान ।।106।।
गुरु भैयन्हि संग हनुमाना । अंगद सुषेण शरभ बलवाना ॥
द्विविद गयन्द नल अरु नीला । सतसंगत जावहि जामवन्त बलशीला ॥
माँ शबरी के नित दर्शन जावही । चरण कमल रज शीश लगावही ॥
कोल किरात भील बनवासी । संग सतसंग सुनि घर को जासी ॥
सोणमणि शबरबाहु धीया । करि मन को तंग मतंग शिष्या ॥
व्रह्मचारिणी सिद्धि दाता । संत शिरोमणि शबरी माता ॥
उदार हृदय वात्सल्य सजावति । सतसंग अमिय सुधा बरसावती ॥
हिय आनंद उपजत ज्ञाना। नित सत्संग सुनही हनुमाना ॥
मानुष जनम साथ नहीं, कठोर दांत दिखाय ।
मरने से पहले दांत, मुख से जाय बिलाय ।।107।।
जिहवा जनम संगले आये । मरते शरीर संग वो जाये ॥
अति लचिला जिह्वा भाई । इत-उत लपकि मुख करि सफाई ॥
करि मुख स्वच्छ स्वच्छ साधती । तिखा-खट्टा-मिठा स्वाद जानती ॥
एक अति सुकोमल खुरदरी जिह्वा । बतिस दांतो बीच शासित तहँवा ॥
सुनहु पवन सुत रहनि हमारी । जिमि दसनन्हि महुँ जिभ बिचारी ॥
जिभ आगे ही दंत पीछे आसी । निशिचर खल दांत अघरासी ॥
बसे दांत निशाचर मुख में भारी । रहा जिह्वा संत को ललकारी ॥
जहँ विष अमृत इक संग निवासा । तहँ साधी संत करि प्रभु में बासा ॥
राम नाम एक अंक है, सब साधन है सून ।
अंक गये कुछ हाथ नहि, अंक होय दस गून ।।108।।
चित्रकुट पंचवटी रिसिराई । जा राम पहि गोहार लगाई ॥
निचि जाति शबरी धाक जमाई । सरभंग समस्या वृतांत सुनाई ॥
सुनि शूद्रा संत शिरोमणि मचले । फिर भी क्यों उल्टा जाप रचले ॥
देखा सुलझता शबरी संवेदा । माता केकई के कई भेदा ॥
जेहि कारण मोहि वन पठाई । सो सब समय निकट चली आई ॥
वन महु निज समझि गुरु-मातु-पितु । शबरी मिताई करि रण जितु ॥
बुझहु वन विरागी शबरी । बाली झुकाया तेरे तात की पगरी ॥
संग आवत जिति देवासुर संग्रामा । छिना मुकुट बाली निज ग्रामा ॥
बाली मारी मुकुट ले आओ । तभी चक्रवर्ती सम्राट कहाओ ॥
माँ आदेश अरूहल रिसि समस्या । होगा सफल यहि मोरी तपस्या ॥
समुझहि बुझहि सभी ऋषि, लखन कहही समुझाय।

पूजन बैठे रामजी, शिवही समाधि लगाय ।।109।।

शिव ध्यान धरि श्री राम देखा । समस्या सरभंग न शबरी लेषा ।।
हुआ सरभंग ऋषियन आपा । वाचिक मांसिक कार्मिक पापा ।।
था तप का घमण्ड ऋषियन भारी । शबरी ताहि क्षण में निवारी ।।
वन बाग वाटिका रोका ताही । फूल झरी तरू बांझ रहाही ।।
सरिता सर जल वापी तड़ागा । अवरोधत ही रीसि भये अभागा ।।
सबका करनी आगे धर दीन्ही । रक्त कीट उगे सर संग न कीन्ही ।।
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ।।
मानव मूल्य पहिचान न रोपा । जप तप नियम आचार तोपा ।।

भक्त-भक्त से घृणा करें, भक्त ही दोष लगाय ।
सो संचय करि पाप सब, 'हंस' नरक फँसि जाय ।।110।।

कुजाति घृणा द्वेश बढ़ायो । अपने ही करनी का फल पायो ।।
निज वतन प्रांत राष्ट्र बचाओ । रहते समय न बैठ गवाओ ।।
चलो मांगो क्षमा अब देर नहीं । और अन्य विचार न सोच कही ।।
कहत सुनत इतिहास पुराना । ऋषियन कष्ट मिटाई सुजाना ।।
नौमी सुदी मधुमास पुनिता । मिलन चलो गावो नही गीता ।।
खबरी जनावहु संगि साथा । शबरी आश्रम चले रघुनाथा ।।
अत्रि अगस्त सुतिक्षण सरभंगा । बहाते चले प्रभु प्रेम की गंगा ।।
लोभ स्वार्थ भोजन का धंधा । करता धर्म क्षेत्र को गंदा ।।
सब के सुख में जो सुख पाते । वही प्रबुद्ध व्यक्ति कहलाते ।।
धरि धिरज सिय दुढ़त रामा । ऋषियन काज चले सुख धामा ।।
अपना अपना करो सुधार । तभी मिटेगा भ्रष्टाचार ।।
शब्र सुघर शब्द शबरी आता । हिय उदार धन्य दुआ दाता ।।
कर न सके जो जन कल्याण । उस नर से अच्छा पाषण ।।

मुनि अगस्त के आश्रम, आये लक्ष्मण राम ।
ऋषि मुनि सब संतन हो, डण्डवत सु प्रणाम ।।111।।

अतिथि सत्कार हुए निहाला । प्रेम कुशल कुशल कहि डाला ।।
महर्षि मतंग शिष्या शबरी । ऋषियों गले फांसी फंसरी ।।
हम सबका जीना दुभर करि डाला । उल्टा जाप करि वह बाला ।।
जल भीतर बाहर कीट पतंगा । कियो रक्त वर्ण जल तरंगा ।।
सरिता सर जल वापी तड़ागा । नर्क बना ऋषि भये अभागा ।।
जल संकट हे राम सुधारो । अट्ठासी हजार ऋषियन उबारो ।।

त्राहि-त्राहि सब ऋषि पुकारा । राम शबरी रचि लीला निहारा ।।
अन्तर्यामी भेद सब जाना । ऋषियन दोष है प्रकट बखाना ।।

थे त्रिकालदर्शी ऋषि, महाज्ञानी मतंग ।
शिष्या सता के ऋषि सब, खुद बने है पतंग ।।113।।

सामाजिक बहिष्कार स्वीकारा । शरणागता शबरी उद्धारा ।।
धर्म बिटिया दिन्हो नूर खजाना । सिद्धि स्वरूप ज्ञान तत्व महाना ।।
अहिंसाव्रती वह बाल ब्रह्मचारी । तासो द्वेश ऋषि करे अनारी ।।
ताकी राह घाट सब रोका । लगे सत्यवादी ब्रह्मचारी टोका ।।
यहि कारण सर जल लाल भयो । ऋषि गर्व चूरण कीट अयो ।।
देर करो नहि ज्ञानी आला । है सबको नाश करानेवाला ।।
शीघ्र शबरी शरणागत होओ । क्षमा मांगी निज पाप धोओ ।।
शिव शपथ शबरी करिहै कल्याना । भवानी दर्शन चलो गुरुस्थाना ।।
चलत राम आश्रम पुछ लीन्हा । दुर से दण्ड प्रणाम कीन्हा ।।
शीघ्र लखन को आश्रम पठाई । खबरी जनावहू शबरी जाई ।।

शुबह की नयी किरण में, गुरु का ध्यान लगाय ।
आज अैहै श्रीराम जी, शबरी को चेताय ।।114।।

कीर्तन भजन करती माता । संदेश लाये लखन भ्राता ।।
ऋषि संग श्रीराम खड़े । शबरी आगे सच छोट पड़े ।।
श्रीराम चरणरत ध्यान खड़े । त्रिकाल दर्शी का वहाँ तेज लड़े ।।
ऋषियो की शेखी जाती रही । गुरु आशिष गहगहाती रही ।।
भक्ता से हारी हरि मुस्काया । शबरी तेज मुख राम समाया ।।
ठहरो ठहरो वक्त न आया । लौटा तेज शबरी समझाया ।।
बहु तेरा अधुरा काम भामिनि । पूरण करि होना साकेत गामिनि ।।

शबरी को हुआ भरोसा, करि गुरु का ध्यान ।
राम तेरे पास खड़े, ले लो भक्ति ज्ञान ।।115।।

सादर सबको समाधि लखाई । गुरु की दण्ड प्रणाम बजाई ।।
गुरु महर्षि मतंग मौन साधि । दियो उनकी यहि समाधि ।।
हूँ अवला अधम अकेली रहती । गुरुवर सेवा दिन रात गहती ।।
साडण्डवत प्रणाम राम कीन्हा । महिमा बखान समाधि धूल लीन्हा ।।
ऋषि देखी समाधि एकी एका । डंड प्रणाम करि माथा टेका ।।
स्तुति करन ऋषि सब लागे । क्षमा करो है हम अभागे ।।
धन्य भवानी शबरी बड़ भागी । करि सेवा महामहिमा पागी ।।
ऋद्धि-सिद्धि 'हंस' पग लपटाई । चूक क्षमा करि करो भलाई ।।

स्तुति समाधि का करि सब, शबरी पग लपटाय ।
क्षमादान दो माँ अब, खड़े रहे शीश लटकाय ।।116।।

खड़े-खड़े पांव थाक्यो मोरा । हाथ जोड़ी राम करत निहोरा ।।
ताहि सुन शबरी सकुचाई । सादर कुश डम्भ टाट डसाई ।।
श्याम गौर सुन्दर दोऊ भाई । सादर उच्च आसन बैठाई ।।
ऋषियन सेवा यतन बनाई । कुमित सुमित निकट बैठाई ।।
सामूहिक कीर्तन स्वर लहराई । संग गावहि रिसि मण्डल हर्षाई ।।
दै दै तारी कीर्तन गावै । राम राम जपो राम पार लगावै ।।
एक राम है जग से न्यारा । एक राम है जगत पसारा ।।
एक राम घट घट में समाये । एक राम दसरथ के जाये ।।
'हंस' माया पहिचान न पावै । राम राम जपो राम पार लगावै ।।

नाचत गावत मगन रही, तन की सुधि भुलाय ।
दशा देखी द्रवित राम, विह्वल भा समुदाय ।।117।।

भाव विह्वल सब भयो अचेता । सुर नर मुनि गधर्व जेता ।।
जित देखो तित शबरी गाती । मधुर मधुर स्वर माति आती ।।
मधुरी बयार जिमि लेहि हिलोरा । जय सद्गुरु जय राम निहोरा ।।
थाक्यो तन बदन सब मोरा । सुधि कब लोगे कौशल किशोरा ।।
भय शोक ताप द्वेश न चीन्हा । कठिन कठिन सुपरिक्षा लीन्हा ।।
कह रघुपती सुनु भामिनि बाता । मानऊँ एक भगति कर नाता ।।
जाति-पाँति कुलधर्म बड़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ।।
भगति हीन नर सोहहि कैसा । बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ।।
नवधा भगति कहऊँ तोहि पाही । सावधान सुनु धरू मन चाही ।।
प्रथम भगति संतन कर संगा । दुसरी रति मम कथा प्रसंगा ।।

गुरु पद पंकज सेवा, तिसरी भगति अमान ।
चौथि भगति मम गुनगन, करई कपट तजि गान ।।118।।

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा । पंचम भजन सो वेद प्रकासा ।।
छठ दम शील विरति बहु करमा । निरत निरन्तर संजन धरमा ।।
सातव सम मोहि मय सब जग देखा । मोते संत अधिक करि लेखा ।।
आठव यथा लाभ संतोषा । सपनेहू नहि देखहि परदोषा ।।
नवम् सरल सब सनछल हीना । मम भरोस हिय हरष न दीना ।।
नव महुँ एकऊँ जिन्हके होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ।।
सोई अतिशय प्रिय भामिनि मोरे । सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे ।।
जोगि वृन्द दुरलभ गति जोई । तो कहुँ आजु सुलभ भई सोई ।।

बार अनेक सम्मान दें, शबरी को समझाय ।
तेरो नाम सुमिरी नर, पाप मुक्त हो जाय ।।119।
विघ्नहरण मंगलकरण, श्री गणेश हनुमान ।
माँ शबरी दरवार में, विराज रहे भगवान ।।120।।

मम दर्शन फल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज स्वरूपा ।।
नव प्रकार करि विनती रामा । शिशु भूखा न रहता मातु धामा ।।
हर्षित शबरी कर थाल चढ़ाया । गुरु सुमिरि वही राम बढ़ाया ।।
बिच ही लक्षमण सेंध लगाया । बिजुली कौंधि थाल गरमाया ।।
थर-थर लक्ष्मण कांपी भगे । शिव ध्यानरत रहे राम जगे ।।
थाल बीच लेकर शिव का नाम । प्रेम की जूठी बेर खाया राम ।।
ऐसा अद्भुत स्वाद जो चाखा । अब तक कोउ फल समकक्ष न राखा ।।
घर ससुराल गुरु सदन खाई । या प्रियजन प्रीति भोज न पाई ।।
हकलाती थिरकती चुरगती आती । चखि चखि मीठा बेर बढ़ाती ।।
बेर बेर जूठी बेर खबावती । वात्सल्य रस सरस बरसावती ।।

माता अति पवित्र है, माता से सिरजन होय ।
तीन लोक चौदहु भुवन, माता सम नहि कोय ।।121।।

ज्यूँ माता रही गोद उठाई । निज ग्रास शिशु मुख पहुँचाई ।।
अपनेहुँ खाय बालकहु खिलाई । जूठा ग्रास नही माता कहाई ।।
है माता पद पवित्र संसारा । ताहि जपि नर उतरै पारा ।।
दुःख सुख आता पहले नामा । ता पीछे उच्चरै घनश्यामा ।।
शिशु से मातु विनोद रचावती । ललचाई ग्रास निज मुख नावती ।।
हठी बालक मुख ग्रास छीनी । सो छकि करि हरष नवीनी ।।
माता शिशु प्रेम उमड़ाही । जूठा भेद कञ्चीत कछु नाही ।।
माता पग रज करि परनामा । स्नेह सिक्त जूठी पावत रामा ।।
लज्जित लखन को वेहि बेर दीन्हो । शर्म क्रोध जूठ फल न चीन्हो ।।
छिप के दूर बेर फल फेका । बेर भरा था गुणो का ठेका ।।

वही धौलागिर उगी, संजीवन बुटी लाय ।
लगि लखन के शक्ति में, बूटी प्राण बचाय ।।122।।

लखन की भूल राम दुःख पाई । रण क्षेत्र कल्पत देखी रघुराई ।।
शबरी परि चरन लपटाई । क्षमा करहु निज भक्त की नाई ।।
मंत्र सींचित थाल परिक्षा लिनी । क्षमहु अपराध समझि मम करनी ।।
केहि विधि करो स्तुति तोरी । अधम जाति मैं जड़मति भोरी ।।
अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह मह मैं मति मंद अघारी ।।

सुनु शबरी भाभी बलवाना । हानि लाभ जीवन अवसाना ।।
यश अपयश विरंची राखौं । ममता महान तेरी प्रेम रस चाखौं ।।
प्रेम मगन सुनि बचन न आवा । पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा ।।
पानि जोरि आगे भई ढाढ़ी । प्रभुहि विलोकि प्रिति अति वाढ़ी ।।
सादर जल के चरन पखारे रस वात्सल्य भिगोय पुचुकारे ।।

धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहु चीन्हा, ताकतवर बेर खबाई सही ।
तनु घनश्यामा विहँसत रामा, जूठी जूठी बेर खाई कही ।
बेर आगे विशाला फीका रसाला, जिमि अमिय रस बही धार रही ।
स्वर्ग पताला नही इसके समाना, सीता का परसा भोजन नहीं ।
सुनि फल की महिमा अरु निज गरिमा, प्रभु चरणन लपटाय गही ।
मै नारी अपावन प्रभु जग पावन, जुगल नयन जल धार वही ।
ज्ञान गम्य रघुराई, जन सुखदाई, है आप समान कोऊँ नही ।
करूणा सुख सागर, सब गुण आगर, अब मोही उबारो ठाँव यही ।।
भक्ति नवधा मूरति रस वात्सल्य पूरति, ममतामयी महतारी ।
हे सुता शोणमणि हे संत शिरोमणि, योगनिष्ठ विरक्ती सुधारी ।।
सुयोग अनुगामिनी सतराही भामिनि, अग जग कष्ट निवारी ।
स्वरूप सफल ज्ञाना 'हंस' वेद पुराना, हरि कीर्तन रोम-रोम झंकारी ।।

कन्द मूल फल सुरस अति, दिये राम कहु आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खाये, वारम्बार बखानी ।।123।।

प्रेमनी का ऐसा प्रेम देख, रघुनाथ जी हाथ बढ़ाते है ।
थी अटूट श्रद्धा विश्वास मगन, शबरी की महिमा गाते है ।
ला बेर बेर क्यों देर करे, अमृत से बढ़कर बेर है ये ।
पके मीठे और ताकतवर, अति सुन्दर देखो बेर है ये ।
हे लक्ष्मण तुमने खाये नहीं, पर देखो तो कितने मीठे है ।
स्वर्ग से पाताल तलक तक, सब इसके आगे फीके है ।
तुमने बहुत खिलाये हो, पर इतना कभी आनंद नहीं ।
सीता का परसा भोजन भी, पर इतना कभी पसंद नहीं ।।

श्रीमुख निज महिमा सुनि, गहि चरणन लपटाय ।
मानहूँ रंक राजा भयो, श्री कुबेर धन पाय ।।124।।

हरष मना माँ पूजती, अतिथि रहे श्री राम ।
अति वृद्धा सिद्धा शबरी, निज चाहती विश्राम ।।125।।

बासंति हवा लहराती बसुधा । माँ सेवा में लीन सुधा ।।
धरम निपुणा माता सुख माना । सब विधि योग्य सुधा को जाना ।।

उर उद्गार राम से भाषी । थे राम अतिथि उमा शिव साखी ।।
अति सुख पावत लखन भ्राता । स्मरण करि माँ गुरुवर बाता ।।
राम सम्मुख अभिषेक रचाई । गद्दीनसीन सुधा को बनाई ।।
बलि वेदी पुष्पो की चढ़ाई । यज्ञ कर्म सब सफल लखाई ।।
कभी न वह फूल कुम्हलाई । गुरु की अमित प्रभाव दिखलाई ।।
सिद्ध सम्मता शक्ति दाता । आश्रम भार सौंपी माता ।।

यहि विधि बिते दिवस बहु, अतिथि रहे श्रीराम ।
समय पाय ऋषि समस्या, सकल कही सुख धाम ।।126।।

प्रेम भरा जूठी बेर खाके । माता को विश्वास में लाके ।।
ऋषियो की समस्या रखे राम । जल शुद्ध करो गुरु लेकर नाम ।।
तेरे तप सर जल लाल रहयो । करो क्षमा जो चूक भयो ।।
देर नहि मोरी माता करिहौं । जल शुद्ध करि ऋषि दुःख हरिहौं ।।
बहु प्रकार राम स्तुति कीन्हो । निर्मल बचन माँ शबरी दीन्हो ।।
हाथ पाँव थका चला नहि जाता । करो मोहि मुक्त क्यों तड़पाता ।।
श्रद्धा सुमन पुष्पाहार पहनाई । स्वर्ण पालकी राम मंगाई ।।
पलक बिठा सरोवर पहुँचावैं । माता शबरी यश बहुविधि गावैं ।।
गुरुवर की विनती कर जोरी । दाहिन पग अंगूठा सर बोरी ।।
फूटी निर्मल गंगा जल धारा । हर्षित ऋषि होवे जयकारा ।।

महिमा देखि शबरी का, ऋषि सकल समुदाय ।
पग वंदन करि करि स्तुति, शिष्य गण खुशी मनाय ।।127।।

जय शबरी बाल ब्रह्मचारी । भक्त जनो के तुम हीतकारी ।।
तुम सा ज्ञानी जगत कोऊ नाही । भा भरोस मोरे मन आही ।।
शिव विरंचि तेरे उर बसही । विष्णु अनुग्रह तुम पर करही ।।
दासन के हो तुम रखवारे । संकट में जब तुम्हे पुकारे ।।
होहु सहाय मोरी शबरी माता । दीन जानि दुःख करहु निपाता ।।
ऋषियन जल संकट के त्राता । सरभंग ऋषि के जीवन दाता ।।
कौन चूक मुझसे हुई भारी । नजर पड़ी नही अभी तुम्हारी ।।
हर क्षण राम तुम्हारे यश गावै । माँ कौसल्या सम तुम्हे बतावै ।।
करो अनुग्रह मुझ पर माता । ज्यूँ राम समझी सुत बंधु ताता ।।
पति सुत वित्त बैभव सारा । थाका तन सब लगा किनारा ।।

घृणा द्वेश दुषित रही, अपमान पुड़ी खाय ।
जीवन बिता खोय चली, नही कोई उपाय ।।128।।

हर क्षण नयना आँसू आये । अपना दुःख अब किसे सुनाये ।।
बल विवेक बुद्धि के दाता । आरत हूँ दुःख करो निपाता ।।
ब्रह्म अंश तुम हो अविनासी । सकल जीव के हो उर बासी ।।
कई जन्मो का नाता तुमसे । अब तक भजन हुआ नहीं हमसे ।।
रिद्धि सिद्धि के तुम हो ज्ञाता । सकल सुमंगली के हो दाता ।।
दीन जानि माँ कृपा कीजै । अवगुण छोड़ शरण में लीजै ।।
चार वेद षड् शास्त्र सुज्ञानी । बल विवेक गुण शील निधानी ।।
करहु अनुग्रह मुझ पर देवी । राखहु शरण करू चरणन सेवी ।।
संकट से माँ मुझे उबारो । संकट मोचनी नाम तिहारो ।।
मेरे पाप न एक घनेरो । क्षमा करो अब मोही उबारो ।।

राम लखान शबरी सहित, चरण पूजहि हर्षाय ।
शिष्य शिष्या रिसि जन कर हि, स्तुति जैकारा जाय ।।129।।

जय जयकार हुआ चहुँ ओरा । जय माँ शबरी जय कौशल किशोरा ।।
नभ से सुरन्ह फूल बरसावे । सम्मुख आय दर्शन सुख पावै ।।
जापर कृपा राम की होई । तापर कृपा करे सब कोई ।।
जो निम्न जाति कहि ठुकरावा । शबरी टाट जा वही भोग लगावा ।।
निःश्चल शबरी देही अशिशा । श्री गणेश साक्षी गौरीशा ।।
अवर्ण सवर्ण मिलि एक संगा । समरसता की फहरे तिरंगा ।।
राम ध्वजा शबरी फहरा के । ऊँच-निच का सब भेद मिटाके ।।
भाई बहिनी गुरु जोड़ी नाता । समता की पाठ पढ़ाई माता ।।

एक गुट एक मंच पर, राम ध्वज फहराय ।
रक्त वर्ण जल भरा सर, निर्मल किया हर्षाय ।।130।।

समरसता संसार में सुखी सकल समुदाय ।
विदा मांगी राम सुनो, अब दो मुक्ति बनाय ।।131।।

माँ शबरी श्री राम निहारा । छोड़हु राम मोरी सहारा ।।
जल भरि नयन कहहि रघुराई । सत्य सपथ परम पद पाई ।।
पर हीत बस जिन्हके मन माही । तिन्ह कहुं जग दुर्लभ कछु नाही ।।
जनक सुता कई सुधि भामिनी । जानहि कहु करिवर गामिनी ।।
पम्पा सरहि जाहु रघुराई । तहँ होइहि सुग्रीव मिताई ।।
सो सब कहहि देव रघुवीरा । जानत हूँ पूछहु मति धीरा ।।
तेरो तात देवन्ह के नेता । देवासुर संग्राम विजेता ।।
चक्रवर्ती भूप उपाधि कांधे । कही सम्राट स्वर्ण मुकुट बांधे ।।
विजयी जुलूस हिय हरष मनावही । जय जय कहि दशरथ ही नवाजही ।।

चक्रवर्ती सम्राट सु सम्माना । पा निज धाम चले चढ़ि विमाना ।।

बाली क्षेत्र मार्ग सु, केकई दसरथ आय ।
बाग उतरि जलपान करि, अवध चलहि हर्षाय ।।132।।

बाली बाग विचित्र स्थाना । चूंगी चुकावही जाय सुजाना ।।
पहनी चक्रवर्ती मुकुट हिय गाजा । सोई बाग से चल ही महाराजा ।।
बाली अनुचर कर मांगन लागा । बचन सुनि भूप क्रोध जागा ।।
ताहि डाटी नृप बोले कटु बानी । मोहि समान को योद्धा आनी ।।
सम्राट मुकुट ये देखो मोरा । देवासुर संग्राम जिति चहुओरा ।।
मोरे अधिन सब राज तोरा । बाली एक अधिकारी मोरा ।।
बगल से बाली सुनतही क्रोधा । हय रथ नारि छिनि योद्धा ।।
वीर रस सानी वचन अस कहेऊँ । मोहि से युद्ध करि नारी लहेऊँ ।।
या कर में छाड़ी नारी अब जाहूँ । होय प्रिय प्राण त जा भागि नाहू ।।
मारी झपटा भूप भहरावा । स्वर्ण मुकुट छिनि नगर पठावा ।।

गिरे सिर बल दसरथ के, छाती दाबी लात ।
बाली के महा कोप से 'हंस' खावहि मात ।।133

दीन हीन निज सुहाग हेरी । बहु विधि विनय केकई केरी ।।
कर में मुकुट अब राखहु ताता । भूप प्राण जनि लेहु विधाता ।।
केकई अरज सुनि विहंसा बाली । भूप बकसी बजाया ताली ।।
श्री हीन हो भय भूप भागे । रानी केकई को करि आगे ।।
जेहि कारण इहा तू आया । सुफल होगी काज सुनु रघुराया ।।
बाली सुग्रिव है दोऊँ भाई । दोनों में विवाद छिड़ा है आई ।।
बाली के भय सुग्रिव भागा । ऋषमुख पर अब रहने लागा ।।
मतंग साप वहाँ बाली न जाता । सुग्रीव मिताई जा कर लो ताता ।।
बार बार प्रभु पद सिर नाई । प्रेम सहित सब कथा सुनाई ।।
सप्त सर्ग रामायण भाषी । गुरु मुरति हिय माहि राखी ।।

हमें गुरुदेव सहारा, औरे न मिलता साथ ।
जीवन हमारा दुबारा, ये नहि खिलता नाथ ।।134।।

श्रीमन हरि ऊँ नारायण, नारायण नारायण । भजुमन ।।
डगरी डगरी फूल विछावत, शबरी गावत रामायण ।।श्री०।।
आयो आयो राम जगावत गुरुको, श्रद्धा सुमन समाधायण ।।श्री०।।
पूजी पूजी गुरु चरण रघुवर को विभूति सफल समर्पायण ।।श्री०।।
जूठी जूठी बेर शबरी परोसत, श्रीराम ममता भोग लगायण ।।श्री०।।
भीगी भीगी वात्सल्य प्रेम पुचुकारत, सीता समस्या सुलझायण ।।श्री०।।

दौड़ी दौड़ी टेर सुनि कृष्णा के नंगी बदन ही दुलारायण ।।श्री०।।
फेकी फेकी गुदा छिलका परोसत, श्रीकृष्ण भोग लगायण ।।श्री०।।
देखी देखी तमाशा विदुर विहंसे, वात्सल्य स्नेह उमणायण ।।श्री०।।
दुर्योधन के घर मेवा त्यागि, साक् विदूर घर खा जायण ।।श्री०।।

श्री रामचन्द्र चरणौ मनसा स्मरामि,
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्री रामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि,
श्री रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

मन कर्म वचन सेवा रति, मुख से जपती राम ।
भगवद्धाम प्रयाण करि, माँ शबरी सुख धाम ॥135॥

कहि कथा सकल विलोकि हरि, मुख हृदय पद पंकज धरे ।
तजि योग पावक देह हरि पद, लीन भई जहँ नहि फिरे ।।
नर विविध कर्म अधर्म बहुमत, शोक प्रद सब त्यागहूँ ।
विश्वास करि कर दास तुलसी, राम पद अनुरागहूँ ।।
चारिउ सोपान चारिउ नाम शुभ चारिउ फल नर पावही ।
गोपा मंगला सुभद्रा शबरी, एक भक्ता श्री नाम उच्चारही ।।
माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण, मति अनुसार 'हंस' गावही ।
भारतीय मूल भीलनी कथा सो, परमानंद स्नेह उपजावही ।।
अति प्रीति मानस राखि रामहि, राम धामहि सो गई ।
तेहि मातु ज्यो रघुनाथ अपने, हाथ जल अंजलि दई ।
थी ऋषभ ऋक्ष कोल किरात बीच, एक फूक दी जान नई ।

समरसता समता सभ्य संसार में, एकता की बीज बोगई ।।
जाति हीन अघ जन्म महि, युक्त कीन्हि अस नारि ।
महामंद मन सुख चँहसि, ऐसे प्रभुहि बिसारि ।।136।।

।।इति संत जी.आर. हंस कृत माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण: तृतीय सर्ग: श्रीश्री शबरी मर्यादा दर्शन समाप्त:।।

स्तुति मर्यादा दर्शन

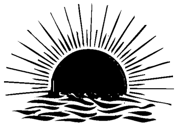

ॐ शबर्यै नमः

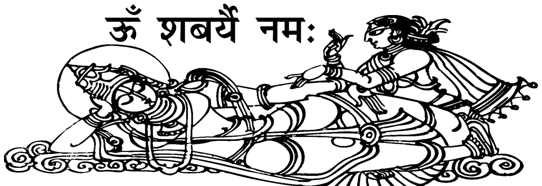

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वधारं गगन सदृशं मेघवर्ण शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकांत कमल नयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी ।
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।।
या लक्ष्मीर्दिव्य रूपैर्मणिगण खचितैः स्नापिता हेमकुम्भै ।
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ।।

पवित्रता जीवन का मूल है और स्तुति वहाँ तक पहुँचने का रास्ता । स्तुति को हम चाहे जिस नाम से पुकारे-प्रार्थना, पूजा, उपासना, वंदगी, प्रेयर या कुछ और, लेकिन सब में एक ही सार्वभौम सत्य है । और वह है शाश्वत मूल्यो की पहचान और स्वीकार्यता ।

प्रार्थना स्तुति का विधान सभी धर्मों में है । सनातनी लोग गीता पढ़ते है तो मुसलमान कुरान । इसी तरह सतनामी श्री सतनाम साहिब जी पढ़ते है, सिख लोग गुरु ग्रंथ साहिब, इसाई बाइबिल, बौद्ध धम्मपद और जैन आगम पढ़ते है । नाम रूप, शब्द सिद्धांत, शास्त्र, संस्कृति सब संस्कार की भिन्नताओ के बावजूद साध्य सबका एक है । शाश्वत मूल्यों को स्वीकारना, संत स्वामी शोभनाथ राव हंस जी ने भी प्रार्थना स्तुति को जीवन में अनिवार्य माना है । उनके अनुसार स्तुति, उपासना आदि वहम नही हैं, बल्कि हमारा खाना-पीना, चलना-बैठना जितना सच है, प्रार्थना का सच उससे भी अधिक है ।

स्तुति भावनात्मक चेतना का एहसास है । इसे हम जाति, धर्म सम्प्रदाय देश तथा भाषा की सीमाओं में नहीं बांध सकते । यह हर उस व्यक्ति का स्वभाव है जो स्वंय को पहचानने का पुरूषार्थ करता है । स्तुति है तो व्यक्तित्व है, आदर्श है, उद्देश्य है, विचार है, कर्म है, अन्यथा तो मनुष्य संस्कारों की भीड़ में भटकता एक निरूद्देश्य मोहरा है । जो जीता तो है मगर जीने का अर्थ नहीं जानता ।

अक्सर लोग स्तुति अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति का एक हथियार बना लेते है । कुछ लोग कहते है कि स्तुति मांग का एक बहाना है । भौतिक सुख पाने की चाह में मनौतिया (......) मानी जाती है । पाप छिपाने के लिए धार्मिकता का आडम्बर किया जाता है । इस प्रकार हर स्तुति, उनकी प्रस्तुति, प्रयत्न और परिणाम सब एक धोखा नजर आता है ।

ऐसा करके हम स्तुति के मर्म को नहीं पकड़ सकते और नहीं उसके साध्य तक पहुँच सकते है । स्तुति तो भीड़ के मय से बिना संत्रस्त हुए ईश्वर के सुर से सुर मिलाने का एक आसान तरीका और माध्यम है ।

मांग के साथ राग जुड़ा है और राग के साथ द्वेश, इस प्रकार ईश्वर हमें नहीं दिख सकता क्योंकि ईश्वर तो राग द्वेश से मुक्त, चेतना के शिखर पर आरूढ़ है ।

अपने सुख-दुख के लिए मनुष्य खुद ही जिम्मेदार हैं, क्योंकि एक को सुखी बनाकर दूसरो को दुखी करना ईश्वर का स्वभाव नहीं है । इसलिए ज्ञानाश्रय जेता संत शिरोमणि गुरु रविदास जी महाराज कहते है कि ज्ञान की वृद्धि और आंतरिक शुद्धता का विकास खुद व खुद हमारे कर्मों को सुधारता है । अच्छे कर्म करके हम जीवन को खुशहाल बना सकते है और अच्छे कर्मो से ही अहम् का नाश होता है ।

स्तुति प्रार्थना सिर्फ मंदिर मस्जिद गुरु धाम या गुरु द्वारा या चर्च में ही नहीं होती । वह जब भी, जहाँ भी, और किसी के भी साथ हो सकती है । सच्ची प्रार्थना के लिए तन और मन का एकीकरण जरूरी है ।

किसी ने लिखा है कि कार्य ही स्तुति है प्रार्थना ही पूजा उपासना है । जब ऐसा होता है तो हम अपने कार्यो के प्रति ज्यादा निष्ठावान हो जाते है । स्तुति प्रार्थना के लिए आस्तिक होने की भी अनिवार्यता नहीं है । प्रार्थना के क्षणों में नास्तिक भी उतना ही नैतिक और पवित्र हो सकता है । जितना कि आस्तिक । असल में तो आत्मदर्शन की एक कठिन प्रक्रिया है ।

स्वयं से साक्षात्तकार की एक प्रक्रिया प्रार्थना के पवित्र क्षणों में व्यक्ति अपने भीतर प्रभु की असीम सत्ता का अहसास करता है । ऐसी स्थिति में एक देह एक माध्यम बन जाती है । एक ऐसी नाव जिसके सहारे व्यक्ति समुन्द्र रूपी संसार को सफलता पूर्वक पार कर लेता है । प्रार्थना स्तुति एक ऐसी शक्ति है जो अंधेरे में रौशनी बनकर भीड़ में अकेले खड़े होने की सामर्थ्य होती है । इसका एक रूप हम परोपकार में देखते हैं जो हमें दिन दुखियों की संवेदनाओं से जोड़ती है । हरि ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ।

❖

अथ माँ शबरी चालीसा

श्री गणेश हनुमान जी, पुरण करो सब आस ।
हंस दीन हुँ माँ शबरी, देहुं बुद्धि परकास ।।137।।

जय शबरी जय सिद्धेश्वरी माता । राम रसायन बूटी दाता ।।
जय नारद जय मतंग दासा । शरणागता पुरवहु अभिलाषा ।।
मातु सोणमणि सुभद्रा जायी । भील राज शबरबाहु सुखदायी ।।
भगवत भक्त सुभद्रा नामा । हरिऊँ जपती रही पितु धामा ।।
निज शादी सुनि सामिष भोगा । रहु अहिंसाव्रती साधु योगा ।।
पूर्व साप गोपा मंगला शोकी । सुभद्रा तृतिय जनम अवलोकी ।।
मातासन बोली कर जोरी । बाल ब्रह्मचारी रहूं निहोरी ।।
कौतुक में कही माता मतिभोरी । होगा कलही शादी तोरी ।।
सरस अरज देखी अनसूना । मुक्त करि पशु शादी ऊना ।।
गृहि त्यागी गह्वर वन आई । नारद जी से दीन्हा पाई ।।
संत सुयोग भेद समझायो । महर्षि मतंग आश्रम पठायो ।।
नाम बदल शबरी रख दीन्हा । छिपि छिपि ऋषियन सेवा कीन्हा ।।
निःस्वारथ सेवा यतन बनाई । मतंगाश्रम अधिकार पाई ।।
सबसे पहिले जाग नहाई । बूटी फूल फल चून लाई ।।
वंचित ऋषियन तूफान मचाई । शबरी मतंग कुजात ठहराई ।।
चुनौती करि मंजूर मतंगा । रहे तत्व ज्ञानी शबरी संगा ।।
अैहै राम कहत तनु त्यागा । गुरु बिनु शबरी भई अभागा ।।
दुराचारी ऋषियन मन लोभाई । खोजी खोजी ताहिसन राड़ मचाई ।।
सरिता सर घाट बाट वन रोका । तहं तहं लाग्यो शबरी टोका ।।
गंदला जल रक्त कीट भयानक । सरभंग समस्या बढ़ै अचानक ।।
त्राहि-त्राहि कहि राम पुकारौ । उल्टा जाप शबरी का निवारौं ।।
जल संकट से उबारौ भगवाना । अन्तर्यामी भेद सब जाना ।।
हुआ सब सरभंग तेरे आपा । वाचिक मांसिक कार्मिक पापा ।।
था तप का घमण्ड ऋषियन भारी । शबरी क्षण में ताहि निवारी ।।
चलो मांगो क्षमा अब देर नही । आश्रम आ शबरी चरण गही ।।
ऋषियन संग राम जी आयो । गुरु समाधि दण्ड बजायो ।।
स्तुति करि करि दण्ड बजाई । चूक क्षमा करि करौ भलाई ।।
नौ प्रकार करि विनती रामा । बालक भूखा रहे न मातु धामा ।।
बेर-बेर जूठी बेर खबावती । वात्सल्य रस सरस बरसावती ।।

है माता पद पवित्र संसारा । वाहि जपि नर उतरै पारा ।।
दुःख सुख आता पहले नामा । ता पीछे उच्चेरे घनश्यामा ।।
शबरी पगरज करि परनामा । ऋषियन संग पावत रामा ।।
सरभंग समस्या हल कराई । बहुविधि ऋषियन सुख पहुँचाई ।।
श्रीराम कथा राम ही सुनाई । सकल मनोरथ बेर पुराई ।।
जो माता पग रज ध्यान लगावै । सकल मनोरथ पूरण पावै ।।
सब संकट से मातु बचाई । हंस उन्नति सोपान चढ़ाई ।।
धन धाम धरा किरती बढ़ाई । राम चरणन स्नेह उपजाई ।।
मातु कृपा भव बंधन नासी । सहजही मिले राम अविनासी ।।
ताही सम मोही मिलाओ माता । दर्शन की है भूख सताता ।।
जो यह पढ़ै शबरी चालीसा । होय सिद्ध साखी गौरिसा ।।

लाल बेर लाली लसे, लाल स्फटिक माला ।
लाल कंगन लाल वस्त्र, लाल शबरी बाला ।।115।।

अथ माँ शबरी स्तुति

श्री सोणमणि माता शबरबाहू ताता, सुभद्रा हरि ऊँ कीर्तन दीवानी ।
तात तजि बदनामी वर पक्ष गुलामी, अहिंसोपदेश को दें बिलखानी ।
तात हिंसा छोड़ो जीव रक्षा करो, जीव जीव सब आये एक रुहानी ।
जपि उमा भवानी शिवशंकर दानी, विराग चली गृह छोड़ कहानी ।

गुरु शरण मनाई ज्ञान नारद लखाई, निःस्वारथ सेवा दौड़ चली ।
मन को करि तंग संग महर्षि मतंग, शरणागता शबरी प्रौढ़ ढ़ली ।
मन विकार हटाई कुटि स्वच्छ बनाई, ज्ञान दीप अखण्ड ज्योति शली ।
मेरा अंत आयो वे अन्त पायो, खड़ी रहो राम दर्शन हीत अली ।

आशिष गुरु वर्षाई प्रेम ताज पहनाई, शबरी गद्दीनसीन रहो मोरी ।
गुरु शुन्य समाई विग्रह समाधि बनाई, विचित्र भण्डारा समष्टि जोरी ।
ऋषि करै विरोधा शबरी को शोधा, कही ताहि कुलच्छनी अरु मतिभोरी ।
नदी सर घाटा बन बाग बाटा, ऋषि चहुं दिसि रोकी बलजोरी ।

जहं जहं रोका लगी शबरी टोका, जैसा को तैसा करि डारी ।
रक्त कीट जला ऋषि गर्व फला, भयो गंदला बिपत ऋषियन भारी ।
थाके करि युक्ति नहि पायो मुक्ति, चित्रकुट राम गुहार बिचारी ।
रिसी सुनि संदेशा चले हरन अंदेशा, सब गुप्त भेद जब राम निहारी ।

राम मुस्काई ऋषियन चेताई, निर्मल निमन वचन उच्चारी ।
मम भक्ता सताई सुख चाहहु भाई, थल बिन नभ चहहु उठावन कोठारी ।
अजूबा मेरी भक्ति विरागी श्री शक्ति, पहिचाना नही जाति पाति पुजारी ।
नहीं देर करो और न भोर परो, चलो क्षमा मांगन हैं वे ब्रह्मचारी ।

चले श्री रमानाथा संग ऋषियन साथा, श्री शबरी जी आश्रम पगु दीन्हा ।
कर थाल पसारे श्रीराम निहारे, समाधि ओर इसारा कीन्हा ।
गुरु दण्ड बजाई विभूति माथ लगाई, सब भूकि माता पग गहि लीन्हा ।
माँ से स्तुति प्रेरा करि राम निहोरा, मंत्र अभिसिक्त थाल बढ़ा के चीन्हा ।

थी अजूबा शक्ति नवधा श्री भक्ति, प्रत्यक्ष मूरति थी माता ।
श्री शक्ति जयी शुभ अमृतमयी, जूठी ताकतवर बेर की दाता ।
जूठी देख तरकेऊ लखन लाल भड़केऊ, लगि शक्ति वही बुटी प्राण बचाता ।
दुआ आशिश गहाया रक्षा कवच पहनाया, करिहौं तेरो भाग अचल विधाता ।

इतिहास राम लखाई सब पता बताई, जेहि विधि मिलिहौं लंका सीता ।
हल समस्या प्रबुद्धा करि जल शुद्धा, जो नदी सरोवर वन था रीता ।
रूप राम भजी योग अगिनि तजि, देह पायौ सायुज्य साम्राज्ञी प्रीता ।
जो यह कथा गावही हरि पद पावही, 'हंस' ते न रहही जग सभीता ।

श्रीश्री माँ शबरी आरती

ज्योति से ज्योति जलाओ शबरी मैया ज्योति से ज्योति जलाओ ।
मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ शबरी मैया ज्योति से ज्योति जलाओ
विरक्ति की है अजूबा शक्ति, मुरति प्रत्यक्ष नवधा भक्ति ।
आशक्ति मेरि मिटाओ शबरी मैया ज्योति से ज्योति जलाओ ।
चार बार चरण दो बार नाभि, एक हि मुख सात बार अंगादि ।
तेरी आरती उतारूँ शबरी मैया ज्योति से ज्योति जलाओ ।
नव प्रकार करि विनती रामा, शिशु भूखा न रहता मातु धामा ।
निज कृपा बरषाओ शबरी मैया, ज्योति से ज्योति जलाओ ।
बार बार जूठी बेर खबावती रस वात्सल्य सरस बरसावती ।
सिर वरद हस्त बढ़ाओ शबरी मैया, ज्योति से ज्योति जलाओ ।
अब देर नहीं मोरी माता कीजै, टेर सुनत संकट हर लिजै ।
मंगल दरस दिखाओ शबरी मैया, ज्योति से ज्योति जलाओ ।
तुहि कर्म धर्म के मित गुरु ताता, केहि कारण देर करत हौ माता ।
'हंस' प्रेम सुधा बरसाओ शबरी मैया, ज्योति से ज्योति जलाओ ।

टूटे न तार हो भजन कर निशिदिन ।
आओ बहिनी आओ भाई भजन कर निशिदिन ।।टूटे०।।
रामभक्त हनुमान, सिखो शबरी से ज्ञान ।
सुयोग लागल महान राम, सत्संग कर निशिदिन ।।टूटे०।।
ऊँच-निच के दीवान, पाखण्ड चढ़ल परवान ।
जाति-वरण पहचान, छोड़ो, भजन कर निशिदिन ।।टूटे०।।
शूद्रा शबरी को जान, बेर खाये भगवान ।
नाही छूत के विधान, राम जूठन खाये निशिदिन ।।टूटे०।।
नवद्या भक्ति परधान, दिहले शबरी सम्मान ।
स्तुति कइले महान, राम, शबरी का निशिदिन ।।टूटे०।।
समस्या सरभंग निदान, मर्यादा स्तुति मालादान ।
किया ऋषियन उत्थान, राम, पवले शबरी से निशिदिन ।।टूटे०।।

नोटः- आरती को आरार्तिक और नीराजन भी कहते है । पूजा के अंत में आरती की जाती है । पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है यानि आरती कर लेने से उसमें पूर्णता आ जाती है ।

आरती से पहले मूलमंत्र के द्वारा तीन बार पुष्पांजली देनी चाहिए और ढोल नगारे शंख घड़ियाल आदि महावाद्यो के तथा जय जयकार शब्द के साथ शुभ पांच पात्र में घृत से या कपूर से विषम संख्या की अनेक बतिया जलाकर आरती करनी चाहिए । आरती के पांच अंग होते है-

प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंख से, तीसरे घुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदि के पत्तो से और पांचवे साष्टांग दण्डवत से आरती करें ।

आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में उसे चार वार घुमावे, दोबार नाभि देश में, एकवार मुख मंण्डल पर और सातबार समस्त अंगों पर घुमाये । आरती पूजन के अंत में या साथ ही उनका स्तवन, तथा गुणगान किया जाता है ।

श्रीसीता रामाये मंगलम् । मंगलम् मंगलम् मंगलम् ।
उमापति महेश्वराय मंगलम्३ । लक्ष्मीपति विष्णवाय मंगलम्३ ॥

वीणापाणी स्वरसत्यै मंगलम्३ । शिवाशक्ति देहि मंगलम्३ ।
हरिप्रिया लक्ष्मयै मंगलम्३ । माँ मुण्डेश्वर्यै मंगलम्३ ॥

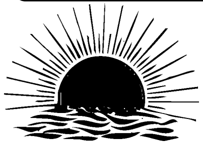

जयकारा

श्री गणेश जी श्रृंगार धरी । स्वरसति ज्ञान भण्डार भरी ।।
महर्षि मतंग मुनि की कमाई । माताश्री शबरी अथाह बढ़ाई ।।
सम्मुख राम लाये सच्चाई । धन्धे में बरक्कत बढ़ाई ।।
दुःख दरिद्रि दूर भगाई । कलह क्लेश शोक मिटाई ।।
गहगहात बालकन्ह फुलवारी । घर में होय सुख शान्ति तुम्हारी ।।
पूरित होये मन की अभिलाषा । विपत्ति शोक चिन्ता भय नासा ।।
माताश्री शबरी का लो नाम । जिससे बन जाये सब काम ।।
प्रेम से बोलो शबरी माता की जय । आनंद कंद श्रीराम की जय ।।

मंगलमूर्ति गुरूवर को बार-बार वंदना ।
बार बार बंदना, हजार बार वंदना ।।
देवर्षि नारद गुरू अलख जगावे ।
महर्षि मतंग गुरू अभिषेक रचावे ।।
सिंहासन शबरी पूजायी अक्षतदिक चंदना ।।
जगत गुरू महिसुर लखाये ।
महिसुर गुरू विराहरि साधु सुहावे ।।
पूजते संत चरणन मिले गुरू संदना ।
अपने अपने ुरू को बार-बार वंदना ।।
बार बार वंदना हजार बार वंदना ।
शबरी के राम को बार बार वंदना ।।

श्री उमा महेश्वराये मंगलम्, मंगलम् मंगलम मंगलम ।
श्री उमा गणेशाय मंगलम्, मंगलम् मंगलम मंगलम ।।
श्री सीतारामावे मंगलम, मंगलम मंगलम मंगलम ।
श्री अंजनी लालाये मंगलम, मंगलम मंगलम मंगलम ।।

राष्ट्रीय गीत

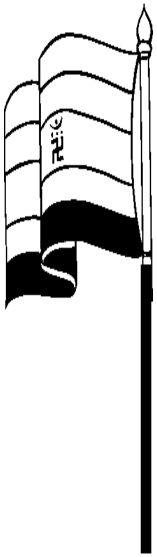

खुशिया मनाव हो मैया झण्डा फहराई के ।
झण्डा फहराई के तिरंगा फहराई के ।।टेक।।
प्रथम फहराये सूर्यसेन, शिव चंवर चामुण्ड जी ।
यदु कृष्ण चेता स्वामी महावीर बुद्ध जी ।
जिओ और जीने दो बहुजन हिताय के ।।खु०।।
दुजे ध्रुव पहलाद हरि हरिचन्द्र महादानी जी ।
संत सुयोग लगा समरसता निशानी जी ।
माता शबरी जी रामनामी ध्वजा फहराई के ।।खु०।।
तिजे शंकराचार्य रामानुज मध्व रामानंद देवजी ।
गुरु रविदास कबीर नानक नामदेव जी ।
समता सतनामी भक्ति आन्दोन चलाई के ।।खु०।।
चौथे अम्बेडकर सुभाष गांधी, पटेल नेहरू प्रसाद जी ।
वतन रक्षा कइले कइले भारत आजाद जी ।
शहीद स्मारक 'हंस' श्रद्धा सुमन चढ़ाई के ।।खु०।।

जन्म जिला कैमूर कमल खिले महरो,
सम्प्रति परिवार मोहनियाँ से आबाद है ।
संत घनश्याम राव हंस वंश गुरु रविदास जी के,
संत शोभनाथ तात मातु कस्तुरबा प्रसाद है ।।
अध्यक्ष सतनाम संघ ज्ञानाश्रय साहित्य के,
हंस प्रेस व्यापार मण्डल निज प्रतिष्ठान है ।
पैतीस ग्रंथ हस्तलिखित लेख लेखनि से निज,
सतनामी भवन 'हंस' पत्र पुष्प के विधान है ।

लम्बी-लम्बी केशिया शबरी डगरी बहारे हो रामा,
येहि रहिया अैहै भगवान हो शबरी के घर में
काठ के कठौतिया शबरी गंगाजल पनिया हो रामा,
चरन धो लैहे भगवान हो शबरी के घर में ।।
कुश के चटइया शबरी झारी के बिछवली हो रामा,
येही पर आशनि लगैहै भगवान हो शबरी घर में ।
खट्टी-मिट्ठी बेरवा शबरी दोना भरीले अइली हो रामा,
भोगवा लगैहै भगवान हो शबरी के घर में ।।

।।संत जी.आर. हंस कृत 'माँ शबरी सम्पूर्ण लीला दर्पण :चतुर्थ सर्ग : श्रीश्री शबरी वैरागी दर्शन समाप्त:।।